॥ ओ३म् ॥

गर्भाधान बिधि

जिस में

धातु और उसके गुण, स्त्री प्रसंग, गर्भनिधान, उत्तम सन्तान की बिधि, गर्भ परीक्षा, उसकी रक्षा, गर्भ में सन्तान की परीक्षा, गर्भवती का कर्त्तव्य, गर्भपात के लक्षण, और उसकी चिकित्सा, प्रसवकालमें प्रसूता की रक्षा, सन्तान न होने के कारण और उसका उपाय, शिशुपालन, व कठिन रोगों की चिकित्सा का वर्णन है जिससे अनेकान सन्तान मृत्यु को प्राप्त हो जाती हैं उन के उपाय प्रमाणिक ग्रंथों और चतुर वैद्यों की सम्मति से लिखे गये हैं।

जिस को

चिम्मनलाल वैश्य कासगंज निवासी ने

मुद्रित किया

जिसपर

श्रीमान् राजा नरायणसिंह साहब वर्म्मा वैकुण्ठवासी ने गुण ग्राहकता की दृष्टि से पंचीस रुपये पारतोषिक प्रदान किये।

रजिस्टर्ड बमूजिब एक्ट २५ सन् १८६७ ई०
प्रथमबार ११००] ता० २०।२।१९१२ [मूल्य ≈)॥

मुं० जानकीप्रसाद वर्म्मा के आर्यविनोद प्रेस अलीगढ़ में छपा।

॥ ओ३म् ॥

भूमिका

ओ३म्-विश्वानि देव ! सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रन्तन्नआसुव ॥ य० अ० ३ म० ३ ॥

अर्थ—हे (सवितः) सकल जगत् के कर्ता समग्रगुणैश्वर्य युक्त (देव) शुद्ध स्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परासुव) दूर कर दीजिये (यत्) जो (भद्रम) कल्याण कारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं (तत्) वह सब हम को (आसुव) प्राप्त कीजिये।

निवेदन

यह बात प्रगट है कि प्राणी मात्र के लिये आरोग्य और स्वस्थ रहने का मुख्य कारण धातुओं की पुष्टि है जिस की धातु में क्षीणता तथा स्वल्पता एवं विकार होजाता है वह अवश्य किसी न किसी रोग में ग्रस्त होजाता है इसका परिणाम यह होता है कि या तो वह शीघ्र ही मृत्यु के कराल मुख में प्रवेश करता है या सदैव के लिये किसी महान रोग में फंसकर गृहकार्यों और विद्योपार्जन और ईश्वराराधन द्रव्योपार्जनादि सत्कर्मों से असक्त रहता है उसका जीवन जन्म भर के लिये निष्फल ही नहीं किन्तु दुःखदाई होजाता है इस के उपरान्त सन्तान अल्पायु और निर्बल होजाती है क्योंकि

जीव सामान्यता से सम्पूर्ण शरीर में रहता है विशेष कर वीर्य और शुद्ध रक्त में, यदि इन में क्षीणता हुई तो शीघ्र ही शरीर का नाश होजाता है।

इस कथन से प्रत्यक्ष प्रकट है कि शरीर में सब खेल वीर्य ही का है इसी से प्राचीन भारत पुरुषों ने २५, ३० ३६, ४० और ४८ वर्ष तक वीर्य के रोकने की आज्ञा की है और यही समय विद्या पढ़ने का नियत किया है जिसको ब्रह्मचर्याश्रम कहते हैं, इसी आश्रम के बनने से शेष गृहस्थ वाणप्रस्थ और सन्यास आश्रम यथावत् बनने की आशा होती है वरन बीज रूपी वीर्य के बिगड़ने से बृक्षरूपी शरीर कभी हृष्ट पुष्ट नहीं होता क्योंकि सुश्रुत में लिखा है कि इस शरीर की चार अवस्था होती हैं पहिली 'बृद्धि' जो १६ वर्ष से २५ वर्ष तक होती जिस में सब धातुओं की बढ़ती होती है दूसरी 'यौवन' जो २६ वर्ष के आदि से आरम्भ होती है तीसरी 'सम्पूर्णता' जो ४० वर्ष तक होती है जिस में सब धातुओं की पुष्टि होती है चौथे 'किञ्चित' हानि जब सब शरीर में पूर्ण प्रकार से सकल धातु पुष्ट होजाते हैं तदनन्तर जो धातु भोजनादि से बढ़ता वह शरीर में नहीं रहता।

इस से सिद्ध हुआ कि जो अड़तालीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का यथावत सेवन कर विवाह करने के पीछे सुनियमानुसार प्रसंग करते हैं वेही जीवन के आनन्दों को पाते हैं, जब तक इस देश में इस का प्रबन्ध रहा उन्नति ही उन्नति होती रही, उस समय भारत रत्न की खान, विद्या और बलका घर, साहस और उद्योग का झण्डा, परोपकार और सत्य-परायण का खम्भ था। देखिये इसी भूमि से यूनानियोंने शिक्षा पाई, मिश्र वाले भी यहां के शिष्य हुए और अरब

वाले भी इसी घर की बदौलत बन बैठे मुख्य तो यह है कि भारत पूर्व समय में सम्पूर्ण संसार के अर्थ सञ्जीवनी गुटिका और कामधेनु गाय थी अर्थात् यहां के मनुष्य वैयाकरण, चिकित्सक, सांगीत के गुरु कवीश्वर ज्योतिषी राज्य प्रबन्ध कर्त्ता, शूरवीर, शिल्पज्ञ, ब्यौपारी तथा ज्ञानी, तत्वदर्शी, महात्मा और विद्वान् इस भारत भूमि में हुए, सो अब वर्तमान समय में वह तत्वदर्शी वह शूरवीर वह सुभट वह धन, वह बल बुद्धि के देव, वह आनन्द, वह स्वतन्त्रता, वह प्रतिष्ठा कि जिस से भारत बासी गण समस्त पृथ्वी पर राज करने के योग्य गिने जाते थे, हाय हाय ! ! सब के सब काल के कराल मुख में आकर पिसगए इस के उपरांत इस देश से विद्या ने मुख मोड़ा और अविद्या ने राज्य किया, जिस से भारत का भारत होगया हा शोक हा शोक हा शोक ।।

देखो प्रत्यक्ष में अंगरेज लोग जो उन्हीं नियमों को यथावत पालनकरते हैं उन की कैसी सुन्दर सन्तान विद्या बुद्धिके देव साहस और पराक्रमके भरे हुए निरोग दीर्घायु वाले होते हैं, जो अपनी बुद्धि और चतुराई से कैसे २ उत्तम कार्यकर रहेहैं जिनको भारतीजन देखकर चकित रहजाते हैं

कैसे परम शोक का स्थान है कि मनुष्य इस बीर्य को तुच्छ और असार समझ नष्ट और विनष्ट करने में कुछभी शंका नहीं करत और बृथा विषय करने में अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं, जिस के कारण निर्बलता के उपरान्त अपने मान्य और बड़ाई को भी हाथ से खो बैठते हैं और इस की अधिकता से शारीरिक समाजिक आत्मिक तीनों प्रकार के

सुखों पर पानी फेर कर अपनी संतानों के आनन्दों को खोदते हैं जिस के प्रमाण की कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि प्रत्यक्ष ही भारत सन्तान नाना रोगों में फंसी हुई है इस विषय में जिनको अधिक देखना हो मेरी बनाई हुई वीर्य रक्षा में देखलें जिस का मूल्य केवल ≈) है ॥

कि वृथा वीर्यव्यय करनेसे क्या२ कुदशा होती है।

इस लिये हे मेरे प्यारे भाइयो और शुभचिन्तको कृपा कर कम से कम २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य को सेवन कर विवाह करो पश्चात सुनियमानुसार स्त्री प्रसंग करो जिस से पूर्वोक्त गुण भारत में शीघ्र आजावे नहींतो यह देश रोग निर्बलता अल्पायु और मूर्खता में फसते २ किसी दिन अवश्य जड़ मूल से उखड़ जायगा।

भारत बासिनी स्त्रियों से निवेदन

हे प्यारी स्त्रियो! आप को भी तो यह बीमारियां क्लेशित करती हैं और तुम सब प्रकार से उदास रहती हो क्योंकि विद्या का नाम तक तुम्हारे कानों में नहीं पहुंचता न्यून अवस्था ही से चौपायों की भांति नाथ दी जाती हो जिस के अपार दुःख मरण तक भोगती रहती हो, इसके उपरान्त शिशुपालन और गृहस्थाश्रम के धर्म से भी भेदू नहीं होती और न इस लोक न परलोक के स्वादों से भेदू होती हो रात्रि दिन विषय क्रीडा में लिप्त रहकर आप और अपने पति को वृद्ध अवस्था में पहुचा देती हो कि जिस से शीघ्र ही सिर हिलने लगता है और तुम्हारी प्यारी सन्तान भी उत्तम बलवान दीर्घायु वाली नहीं होती और तुम को शूल खांसी, दमा, प्रदर, गर्भस्राव आदि रोग घेरे रहते हैं इस लिये उस रीति के अनुसार जो मैंने आप के अर्थ प्रमाणिक ग्रंथों

से लिखी हैं यथावत् पालन करो और अपने पति को भी सतज्ञाती रहो कि वह भी नियमानुसार ही वर्ताव करे।

हे युवतियो! १६ वर्ष से प्रथम पुरुष से कभी स्वप्न में भी प्रसङ्ग न करो तत्पश्चात सदा रीति के अनुसार गर्भाधान और शिशुपालन आदि क्रिया करो, देखो विपरीति रीति के अनुसार चलने से इस देश की यह दुर्दशा होगई।

हे भारतवासिनियो! प्राचीन स्त्रीजन इन नियमोंके पालन करने से ही बड़ी २ चतुर और बुद्धिमती और सुसन्तान हुई क्या तुमने श्री सीताजी का नाम नहीं सुना कि जिन्हों ने शीश महलोंके भोग बिलास को त्यागकर जङ्गलोंके अपार दुःखों को सहन किया, और दमयन्तीने राजा नलके त्यागने पर भी अपने पति को नहीं त्यागा, और द्रौपदीने अपने पुत्रों के मारे जाने पर भी धर्मानुसार गुरु के पुत्र को बचाया अनुसुइया ने कैसा ज्ञानोपदेश सीताजी को किया मन्दोदरी ने अपने पति रावण को कैसा उपदेश सीता हरने पर किया था, लीलावती का विद्या के प्रभाव से सारे संसार में नाम होगया, विद्याधरी अबतक प्रसिद्ध पण्डिता गिनी जाती है, अहिल्याबाई ने बहुत उत्तम राज्य प्रबन्ध किया था अब आंख पसारकर देखो तो श्रीमहाराणी स्वर्णमयी और महाराणी युमनाबाई बड़ौदा और श्री बेगम साहिबा भूपालकैसा उत्तम प्रबन्ध करती हैं और श्रीमान् अङ्गरेजों की मेमसाहिबा कैसी सुन्दर स्वच्छ बल सहित दृष्टि आतीं हैं, क्या तुम ने श्री महाराणी विकटोरिया कैसरहिन्द का नाम नहीं सुना जिनके राज्य में शेर बकरी एक घाट पानी पीते और सर्वजन आनन्द से कालक्षेप करते धन्य! धन्य!! धन्य!!! क्या

तुमने कभी मेम साहिबों को नहीं देखा भारत के बाजारों में आनन्द पूर्वक शोभाओं का अवलोकन करती हुई दृष्टि पड़ती हैं जिन में नानागुण विद्यमान हैं हाय कैसे सोच का स्थान है कि यह स्त्रियां अपनी आयु को आनन्द मङ्गलसे व्यतीत करें और भारत की स्त्रियां लड़ाई झगड़ा आदि असत्कर्मों में व्यय करें, तिसपर भी कभी नेत्रों को न खोलें गृहस्थाश्रमअर्थात् नारायणी शिक्षाका छटाएडीसन देखलो ?।)

हे भारत के प्रकाश करनेवाली युवतियों ! अब सब प्रकार से विद्या का बाजार गर्म है आप भी निद्रा को छोड़ विद्या रूपी अमृत का पान कर शीघ्र सुनियमानुसार चल निकलो कि जिस से नाना भांति के रोग जो भारत को जीर्ण कर रहे हैं आपके उत्साह करते ही संकट जावें, यदि आप सुनियमानुसार चलो तो शीघ्र ही बलवान ज्ञानवान् सज्जन दीर्घायु वाले निरोग पुत्र पुत्री उत्पन्न होने लगें, तो फिर सतयुग वर्त्तमान होजावे, लो अब कृपाकर इस ओर ध्यान दीजिये यह आपके लिये सञ्जीवनी गुटिका है आप की यह कुदशा देखकर मुझ को अब रोना आता है, इस लिये मैं और मेरी स्त्री आप से विनय पूर्वक विनय करते हैं किआप कृपाकर इस पुस्तक को एकबार पढ़कर दत्त चित्त हो इसके अनुसार बर्त्ताव कीजिये, फिर देखिये कैसा आनन्द औरसुख मिलता है, मुझको आशा है कि फिर कभी इन दुःखों के स्वप्न में भी दर्शन न होंगे।

६ जनवरी सन् १९०१	देश का हितैषी
स्थान	चिम्मनलाल वैश्य
तिलहर जि० शाहजहांपुर	कासगञ्ज निवासी

॥ ओ३म्

गर्भाधानविधि

वीर्य्य की उत्पत्ति और उस के रहने का स्थान और गुण

प्रति दिन जो भोजन मनुष्य--स्त्री करते हैं वह पक्काशय में पहुंच जठराग्नि द्वारा आमाशय अर्थात् नाभि और बक्षस्थल के बीच में जाकर पचता है उससे दो वस्तु उत्पन्न होती हैं एक प्रसादाख्य रस और दूसरा किट्ट जिसको मल कहते हैं

प्रसादाख्य रस में जो निकृष्ट कीट का अंश है उस से मल, मूत्र, पसीनां, बात, पित्त, कफ, आंख, नासिका और मुखादि का मल बनता है और रस के मध्य मांस स रोम, कूप, केश, डाडी, मूंछ, रोम, और नखादि उत्पन्न होते हैं।

प्रसादाख्य रस से रक्त और उस से मांस और मांस से मेदा (चरबी) मेदा से अस्थि (हड्डी) और उस से मज्जा और मज्जा से शुक्र अर्थात वीर्य्य नित्य प्रति उसी प्रकार उत्पन्न होते रहतेहैं जैसा कि गाड़ी का पहिया घूमता रहता है यही सोता शरीर को धारण करते हैं--इसी लिये इनको धातु कहते हैं।

प्रिय वरो ! जैसे ईख में रस, दही में घी और तिलों में तेल सर्वत्र रहता है उसी भांति शरीर का राजा सब देह और त्वचा में रहता है जिस प्रकार फूल की कली में सुगन्धि आदि से ही होती है परन्तु बिना खिले जानी नहीं जाती उसी भांति शरीर का राजा बालक पन से शरीर के साथ

ही उत्पन्न होता है परन्तु बिना युवा अवस्था आये उसकी उपलब्धि नहीं होती।

इसी के द्वारा मनुष्य सब प्रकार के कार्य करने को सामर्थ्यवान् होता है। यही गर्भ का बीज और जीव का परम आशय है।

जब स्त्री और पुरुष के संसारी सम्बन्ध से गर्मी उत्पन्न होकर वायु को उत्कट कर देती है तब उस गर्मी और वायु के संयोग से वीर्य्य अपने स्थान को छोड़ स्त्री के गुह्यस्थान में गिर स्त्री के रज से मिल कर गर्भाशय में चला जाता है, तब ही गर्भस्थित होकर सन्तान उत्पन्न होती है इसी क्रिया को गर्भाधान कहते हैं जैसा कि—

गर्भस्याऽधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणम्।
यस्मिन्येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्॥

ऋतु काल।

स्त्री स्वाभाविक रीति से प्रति मास रजस्वला होती है। उस दिन से १६ दिन तक प्रसङ्ग करनेकी अवधि है उसी को समय और ऋतु काल कहते हैं।

रज के निकलने के समय दर्द न हो रुधिर कम न निकले उस के निकलने से चित्त प्रसन्न हो इस के उपरान्त रुधिर की भांति धब्बा न जमे और जब दर्द हो और रुधिर का रङ्ग फीका व पीला हो और रज थोड़ा निकले वा अधिक हो गर्भ भी नहीं रहता रज निकलने की अवधि ३० वर्ष तक है। जब यह रज बंद होने को होता है तो स्त्री में निम्न लिखित गुण होते हैं।

प्रथम स्त्री मोटी होती जाती है रज अधिक निकलता है

मांस में हाड़ छुप जाते हैं जब महीने से प्रथम और महीने के ऊपर स्त्री धर्म हो तो उस का उपाय करना आवश्यक है बहुधा स्त्री जन्मभर स्त्री धर्म नहीं होतीं उन को बांझ वा पुरुष बन्ध्या कहते हैं।

रजस्वला का धर्म

(१) तीन दिन तक कोई पदार्थ न छुये (२) परिश्रम भी न करे (३) दिन में शयन त्याग दे (४) अंजन उबटन, रुदन, नख काटना, दौड़ना, बहुत हंसना, उच्चस्वर से बोलना, बादी भोजन न करना चाहिये (५) मैथुन का त्याग करना उचित है (६) कठोर शब्दों को न सुनें, कंघी से केश न काढ़े (७) पंखे से वायु न करे।

हे सुन्दरियो सुश्रुत कार आज्ञा देते हैं कि जो स्त्री दिन में सोती हैं। उसका बालक निद्रालु और आलसी होता है और अंजन काजल लगाने से अन्धा, रुदन करने से विकार दृष्टिवाला स्नान करने और जल सेवन करने से दुःखी तैल लगाने से कोड़ी, नख काटने से नख रोग, दौड़ने से चंचल, हंसी करने से काले दांत वाला, अति भाषण से बकवादी भयंकर शब्दों के सुनने से बहरा अवषलेखन से खल्वाट, पवन सेवन से मत्तः बालक होता है इस लिये तुम इन दिनों किसी प्रकार की सजावट न करो और न पुरुष का दर्शन करो केवल एकान्त में रहकर व्यतीत करो जब रज का निकलना बन्द होजावे तो स्नान कर निर्मल वस्त्र धारण कर, नाना भांति से श्रृंगार कर इस के पश्चात यह भी स्मरण रहे कि स्नान के पश्चात् प्रथम जिस पुरुष का दर्शन करेगी उसी के तुल्य प्रसव जनेगी इस कारण

अपने पति या पुत्र या पुत्री अथवा और किसी रूपवान् सम्बन्धी का दर्शन करले और सदा उसी का ध्यान बनाये रहे जिस से स्वरूपवान् सन्तान हो ।

जिस प्रकार प्रथम की चार रात्रियां निन्दित हैं उसी प्रकार ग्यारहवीं तेरहवीं रात्रि त्यागना चाहिये इसके तद नन्तर पूर्णमासी अमावस्या अष्टमी का भी निषेध किया है शेष दस रात्रियों में सम अर्थात् छठी आठवीं बारहवीं रात्रियों में गर्भ रहने से पुत्र बनेगी क्योंकि इन दिनों में पुरुष के वीर्य्य की उन्नति होती है और बाकी विषय अर्थात पांचवी सातवीं नवीं पन्द्रहवीं रात्रियों में गर्भ रहने से पुत्री उत्पन्न होगी इस हेतु से कि इन दिनों में स्त्री के रज रज उन्नति होती है---

इसका मुख्य तात्पर्य यह है कि पुरुष के बीज के अधिक होने से पुत्र और स्त्रीकेरज अधिक होनेसे पुत्री उत्पन्न होती है और दौनों के तुल्य होनेसे नपुंसक और कम होने से गर्भ ही नहीं रहता । रजोदर्शन के जितने दिन पीछे गर्भाधान किया जायगा उतनीही श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न होगी यहां तक कि १६ दिन की सन्तान अधिक गुणवाली होती है इस लिये सन्तान के अर्थ उपरोक्त रात्रियों में पुत्री वा पुत्री के अर्थ एक२ बार प्रसङ्ग किया करो और दिवस में इस क्रिया को कदापि न करो सदा रात्रि के ग्यारह बजे के पश्चात् दो बजे तक इस क्रिया के करने का समय है परन्तु पेट भरे, भूक लगने अधिक गर्मी और परिश्रमकरने के पीछे आलस्य में बहुतजाड़ गर्मी और क्लेश क्रोध नशेकी दशामें इस कार्य को कदापि न करना चाहिये ऐसे समय में सम्भोग करनेमें नानाप्रकार की हानि होती हैं जब पुरुष के शरीर से राजा के निकलने

का समय हो तब दोनों सम्भाव को प्राप्त हो स्त्री अपनी गुह्य इन्द्रिय को स्वांस से ऊपर खैंच कर वीर्य को गर्भाशय में स्थिर करे । तत्पश्चात् मनुष्य थोड़ी देर बाद पृथक होकर मूत्र त्याग करे स्त्री तीन चार मिनट उसी भांति लेटकर पीछे होले से उठ शीतल जल से गुह्यस्थान को शुद्ध करे इस के उपरान्त एक घण्टा वा डेढ घण्टे के पश्चात् ग्रीष्म में गुनगुने और शीत में गर्मजल से किञ्चित दोनों स्नान करें कि जिससे शरीर की गर्मी शान्त होजावे, तदनन्तर केशर ४रत्ती, सालिब मिश्री ४ माशे, शकाकुल मिश्री ४ माशे, इलायची सफेद २ माशे, बंशलोचन २ माशे, दारचीनी २ माशे, उटङ्गनके बीज २ माशे, मिश्री १ तोला इन सबको पीसकर सम्पूर्ण एक बार फांककर ऊपर से ऽ।। सेर गाय के दूध में एक छटांक मिश्री मिलाकर पूरी ताकत वाले को पीना चाहिये और कम बलवाले को आधी खाना चाहिये पश्चात अपने २ स्थान पर सोंवे जब गर्भ स्थित होजावे फिर कदापि स्त्री प्रसंग न करे क्योंकि प्रथम तो वीर्य दोनों का निष्फल जाता है, दूसरे गर्भपतन होजाने का भय है, तीसरे वृथा वीर्य नष्ट करने से नाना प्रकार की हानि होती है जिनका विशेष वृत्तान्त जानना होतो मेरी बनाई हुई हिन्दी वीर्य रक्षा या उर्दू हिफाजत मनी, में देखलें ।

उत्तम सन्तान के उत्पन्न करने की बिधि

जैसे ऋतु, क्षेत्र, जल और बीज इन चारोंके उत्तम होने पर बिधि पूर्वक संयोग से उत्तम अंकुर उत्पन्न होता है उसी प्रकार ऋतुकाल (ऋतु या समय) क्षेत्र (गर्भाशय) जल (अहार के पचने पर उत्पन्न हुआ रस) बीज (शुक्र

और आर्त्तव) के नियमानुसार संयोग से उत्तम गर्भ उत्पन्न होता है ।।

इसलिये उत्तम, उद्योगी-धर्मात्मा—सन्तान चाहने वाले पुरुषों को योग्य है कि वह शुद्ध और बहुत वीर्य वाला हो कर २५ वर्ष की आयु में १६ वर्ष वाली ऐसी स्त्री से प्रसंग करें कि जो शुद्ध योनि रक्त और गर्भाशय वाली हो ।

(२) स्त्री को ऋतु स्नान के दिन से उत्तम जौ का मन्थ घीशहत और गौर वर्ण वाली ऐसी गायका दूधकि जिस का बछड़ा भी श्वेत वर्ण का हो चांदी वा कांसे के पात्र में मिलाकर भूख लगने पर सातदिन खिलावे प्रातःकाल शालि अन्न वा जौ के पदार्थों को दही, घृत, शहत अथवा दूध के साथ खवावे और सायङ्काल के समय उत्तम घर में, उत्तम पलङ्ग आसन, यान पर वस्त्र भूषणादि से अलंकृत कर के बिठलावे । शान्ति प्रदायक, सुन्दर, मनोनुकूल कथा वार्त्ता सुनाता रहे—इसके अतिरिक्त उस को सुन्दर आकृति वाली शीतल बचन बोलने वाली शुभाचरणी स्त्री पुरुषों से मिलावे और उत्तम २ दिल के प्रसन्न करने वाली वस्तुओं कोदिख लावे सात दिनतक बस इस प्रकार कर्म करते हुए स्त्री और पुरुष दोनों ब्रह्मचारी रहें फिर आठमें दिन देहपर उबटनादि लेपन करके दोनों सिर से स्नान करें—सुन्दर—स्वच्छ वस्त्रों, माला और आभूषणों को धारण करें—

फिर ऋत्विज को बुलाकर पुत्र के चाहने वाली स्त्री अपने पति के साथ अग्नि के पश्चिम और ऋत्विज के दक्षिण में बैठकर महाव्याहृतियों का उच्चारण कर २ विधि पूर्वक हवन करें फिर उसकी समाप्ति पर ब्राह्मण लोग स्वास्तिवाचन के

पश्चात यज्ञ शेष को प्रथम पुरुष फिर स्त्री को खिलावे फिर रात्रि के समय रीत्यनुकूल आनन्दपूर्वक वार्त्तालाप करते हुए क्रोधादि दोशों से रहित हो रमण करें।

उत्तम सन्तान होने के निमित्त वैद्यक में अनेकान औषधियां लिखी हैं उन में से एक हम भी लिखते हैं।

दो खण्ड थावांहल्दी दूसरे खानेकी हल्दी, चन्दन का चूरा, कुछ जटामासी, मीरवेक शिलाजीत, केशर, मुस्ता, भद्रमोथ, इन सब का चूर्ण कर के सब समभाग लेके गूलर के पात्र में गाय के दूध के साथ मिला उसका दही जमा और गूलर के मथन से मथि कर उसमें से मक्खन निकाल उस को तपाय घृत कर के उस में सुगन्धित द्रव्य केशर, कस्तूरी, जायफल, इलायची और जाविञ्जी मिलाके एक सेर दूध में छटांकभर पूर्वोक्त सर्वोषधि मिला सिद्ध होने के पीछे एक सेर में एक रत्ती कस्तूरी मिला कर जिस रात्रि में गर्भ स्थापन क्रिया करना हो उस के दिन में वेद के अनुसार होम कर के उसी घीको दोनोंजन खीर अथवा भातकेसाथ मिलाकर यथा रुचि भोजन करें तो सुशील विद्वान दीर्घायु तेजस्वी, सुदृढ़ और निरोग पुत्र उत्पन्न होवेगा, यदि कन्या की इच्छा हो तो जल में चावल पका पूर्वोक्त प्रकार घृत गूलर के एक पात्र में जमाये हुए दही के साथ भोजन करने से उत्तम गुणयुक्त कन्या होगी इसी भांति और सुश्रुत में बहुत औषधियां लिखी हैं

नोट

यदि दो ऋतुकाल व्यर्थ जांय अर्थात् दो बार गर्भाधान

क्रिया निष्फल होजाय और गर्भस्थित न होवे तो उसके अर्थ एक ग्रन्थकार ने निम्न लिखित उपाय लिखा है उस को उपकारी जान हम यहां लिखते हैं ।

जब तीसरे महींने ऋतुकाल का समय आवे तब पुष्य नक्षत्र ऋतुकाल दिवस में प्रथम प्रातःकाल उपस्थि होवे तब जब अर्थात् जौ के दानों को सेंक के पीसकर दो माशे और गायका दही दो माशे लेकर इन दोनों को एकत्रकर पत्नीके हाथ में दे, फिर उस से पूछे 'किं पिबसि' इस प्रकार तीन बार और स्त्री भी अपने पति को 'पुंसवनम्' इस वाक्य को तीन बार बोलकर उत्तर देवे और इसी रीति से पुनः तीनबार करे तत्पश्चात् शंखाहूली व भट कटाई ओषधि को जल में महीन पीसकर उस को कपड़े में छान पति पत्नी की नाक के दाहिने छिद्र में सिंचन करे और दोनों परमेश्वर से प्रार्थना करें ॥

गर्भाधान के पश्चात स्त्रीके कर्त्तव्य कर्म

जब स्त्री गर्भवती हो जावे तब लक्षण, बड़की कोंपल, सहदेई विश्वदेवा (गुड़ सकरी अथवा गंगेरू की कोई २ इन को सफेद फलवाली वला कहते हैं) इन में से किसी एक को दूध के साथ पीसकर तीन या चार बूंद पुत्रकी इच्छा करने वाली स्त्री को दहने नथने द्वारा सुंघावै और थूकने न देवे ।

गर्भ की परीक्षा

जब स्त्री गर्भवती होती है तो वह ऋतुवती नहीं होती और स्तन का मुंह छोटा पढ़जाता है नेत्रों के पलक चिपटने लगते हैं पथ्य भोजन खाने पर भी वमन होती है मुख में थूक भरा रहता है और बिना भोजन किये भी तृप्ति सी रहती है हाथ पांव भारी मालूम होते हैं आराम की लालसा प्रति

समय रहती है अर्द्ध नीचे के अंग में आलस्य अधिक रहता है और कभी २ दर्द शिर में भी होने लगता है और सोंधी खट्टी नमकीन चीजों को खाने को जीचाहता है और कोख फड़कती हैं, रक्तश्राव न होना, कलेजे का धक २ करना श्वास का कम होना और रोमों का खड़ा होना इत्यादि लक्षण से जाना जाता है कि स्त्री गर्भवती है, यदि इसकी परीक्षा करनी होतो शहद को पानी में मिलाकर पिलाने से नाभि में दर्द होगा, और स्त्री को प्रसंग करने की भी इच्छा नहीं रहती यदि ऐसे समय में विषय किया जाय तो नाभि में गर्भाशय तक दर्द होता क्योंकि उन दिनों में गर्भाशय बन्द होजाता है और चार माह बाद दर्द जाता है।

गर्भवती स्त्री क्या करे जिस से कि गर्भ पतन न हो

सदा शरीर को स्वच्छ रखना चाहिये और वस्त्र भी पवित्रता से धारण करे और सास श्वसुर पति आदिकी सेवा यथाविधि कर रोना, पीटना, लड़ाई झगड़ा इत्यादि क्लेशित बातों से अलग रहना उचित है और भंग गांजा अफयून आदि नशे की याकोईछार अति बहुत लोन और खटाई चने लाल मिर्च और गुड़ न खावें और बासी ठंडा गला सूखे भोजनों से परहेज करे, और घी दुग्ध मिष्ट दही गेंहू चावल उर्द मूंग आदि अन्न पालक तुरई रामतुरई आदि पुष्टिकारक शाकका भोजन करें जिन में ऋतु २ के मसाले पड़े हों जैसे गर्मी में सुर्ख इलायची धनियां सोंप जीरा सफेद इत्यादि, और सर्दी में गर्म लौंग तेजपात काली मिर्च केशर डालकर अच्छी भांति उनको शुद्ध कर रांधके भोजन किया करें, परन्तु अधिक भोजन रात्रि के जागरण और क्रोध का त्याग करें और

सोमलता और गुडूच्यादि ओषधि के रस और पान का भी यथारुचि अभ्यास करें प्रातःकाल गर्मी की ऋतु में सेव अनार अंगूर अंगूरी मुनक्के किशमिश, मिश्री शरद ऋतु में गिरी अर्थात् खोपड़ा, बादाम, चिरौंजी, मुनक्का, छुहारा, मिश्री पैसा २ भर प्रति दिन खाना चाहिये ॥

तात्पर्य यह है कि भोजन किये हुए अहारका एक महीने मे वीर्य बनता है और वीर्य ही में जीवका निवास है जैसा सुश्रुत में लिखा है ।

जीवो वसति सर्वस्मिन्देहे तत्र विशेषतः । वीर्ये रक्ते मले स्मिन क्षीणेयाति क्षयं क्षणात ॥

जीव सब शरीर में वास करता है परन्तु वीर्य रुधिर और मल में विशेश कर रहता है जिनके क्षीण होने से जीव शरीर से क्षण भर में निकल जाता है ॥

जब सन्तान उत्पन्न होने के निकट दिन रहें तो जीरा सफेद प्रत्येक भोजन में खावे अधिक परिश्रम न करे-सवारी पर चढ़ना, मलमूत्र का रोकना, उकरूं बैठना, योग्य नहीं कुरूप और अंगहीन स्त्री पुरुषों से अधिक वार्त्तालाप करना योग्य नहीं-नर्म कपड़े को बिछाकर सोना उचित है और सिर के नीचे ऊंचा तकिया रखना उचित नहीं सूने घरमें न जावे उत्तम वायु में रहे-स्वच्छ पानी पीने तेल उवटन शरीर को अधिक न मलवावे, प्रसङ्ग कदापि न करे, सिंगी और जोंक, जुलाब से बचना योग्य है, बिजुली आदि गम्भीर शब्द सुनना न चाहिये हम्माम में स्नान न करे और शिर में बार२ तेल न डाले नहीं तो नजला और उस से खांसी और स्वास चल निकलती है जिस के कारण गर्भ पतन हो जाता है और यदि आवश्यकता होतो अफयून

मिलाकर शिरमें तेल डाले, और सरदी के दिनों में नचिके अङ्गों को अच्छे प्रकार ढांपे रहें और दिन में भी अधिक सोने की टेव न डाले और पांचवे महीने कदापि ऊंचीनीची भूमिपर न चढ़े और बोझ भी न उठावे और सोनेके पश्चात् सावधानी से उठे वरन ऐसी दशाओंमें बालक के उलट पलट हो जाने का भय है, फिर ऐसे बालक के उत्पन्न होने के समय प्रथम पैर आते हैं फिर शिर जिस से प्रसूता और बालक को बड़ी हानि और क्लेश होते हैं बहुधा ऐसे समय में स्त्री और बालक के जीवन में दुबिधा हो जाती है, क्योंकि शिर के रुकने और वायु के न पहुंचने से दम घुट कर मर जाते हैं, ऐसी दशा में बहुत बुद्धिमान दायी हो वहभी चतुर वैद्य या डाक्टर की सम्मत्यनुसार इस काम को करे, (ऐसे बच्चे) को हिन्दी में विष्णूपद कहते हैं) और पांच महीने के पीछे पन्द्रहवें दिन दायी को दिखलाया करें कि जिससे किसीप्रकार की हानि न हो ।

गर्भ से चार माह तक गर्भ गिरने को गर्भस्राव और चार महीने के उपरांत गर्भपात कहते हैं ॥

गर्भ में पुत्र या पुत्री होने की पहिचान

(१)गर्भिणी अपने दूध में जुंयें को छोड़े जो रेंगने लगे तो पुत्र और न रेंगे तो पुत्री ।

(२) चुकन्दर के पत्ते पीसकर स्त्री नाश ले यदि छींक आ जावे तो पुत्र और न आवे तो पुत्री ।

(३) दाहिनी आंख कुछबड़ीसी दीखती है इसी प्रकार दहिनी जांघ मोटी और भारी जान पड़ती है तथा जो स्त्री अपनें बाम अंग को अधिक काम में लावे–पुरुष संगम को अत्यन्त इच्छा हो, निद्रा पान, भोजन, शील और चेष्टा अ-

धिक होती है जिसका गर्भ बांई कोख में एकत्रित रहता हो जिसका गर्भगोल नही अर्थात् फैलाहुआ हो जिसके बायेंस्तन में दूधकी धार पहले निकली होतो जानना चाहिये कि उसके गर्भमें कन्या है। इनसे विपरीत लक्षण होनेपर पुत्र और दोनों के लक्षण मिले हुए होनेपर नपुंसक सन्तान होती हैं।

गर्भपात के लक्षण और चिकित्सा—

गर्भवती स्त्री की नसों में अत्यन्त पीड़ा होने, अंग का शीतल पड़ जाना—लज्जाका जाता रहना, क्रम २ कूले मेंदर्द होना, खून आना, छातियोंका मुरझाना, दूध का निकलना और गर्भाशय में दर्द होना यह चिन्ह गर्भपात के हैं।

यदि अनुचित अहार विहार के कारण गर्भिणी स्त्री के दूसरे वा तीसरे महीने रजोदर्शन होजाय तो गर्भ स्थित नहीं रह सक्ता क्योंकि उस समय गर्भ में सार उत्पन्न नहीं होता

यदि चार मासके पश्चात्रजोदर्शन होतो रजोदर्शनके होते ही स्त्री को कोमल, सुखदायक-शीतल बिछोने बिछाकर ऐसी चारपाई पर शयन करावे जो सिरहाने की ओर कुछ नीची हो फिर अत्यन्त शीतल जलमें मुलहटीका चूर्ण और घी डालकर खूब मिलावे और उसमें एकरुईके फोयेको भिगोकर गुह्य स्थान अर्थात् उपस्थेन्द्रिय में रखदेवे और नाभिकेनीचे सौवार अथवा सहस्रवार धुले हुए घृत का चारों ओर लेप करे फिर गाय के दूध वा मुलहटी के शीतल क्वाथ से सेवन करे अथवा शीतल जलही डालता रहे अथवा बड़ की कोपलों से सिद्ध किये हुऐ घी, दूधमें रुई का फोया भिगोकर रख देवै या इस औषधि में से दो तोला खवा देवै अथवा केवल घी और दूध ही देवे, पद्म, उत्पल×कुमद⁕केशर इन

को शहद और मिश्री में मिलाकर चटावै, सिंघाड़ापुष्कर बीज और कसेरू खाने को देवे, बला, अतिबला, शाली (साठीचांवल) और काकौली×इनको गर्म दूध के साथ खिलावे अथवा शहत और चीनी मिलेहुए लालचांवलोंका कोमल सुगन्धित और शीतल थोड़ा भात देवें।

गर्भ में बालक के मरने के लक्षण–

जिस स्त्री का गर्भ चलता फिरता नहीं प्रसव वेदना (उत्पन्न समय का दर्द) न होती हो शरीर काला पीलापड़ गया हो स्वांस में दुर्गन्ध आती हो शरीर शीतल पड़गयाहो पेटमें पत्थर सा टुकड़ा जमा हुआ जान पड़ता हो दोनों नेत्र शिथिल पड़ गये हों।

गहरी स्वांस आती हो व मल मूत्र समयानुसार न होता हो तो जानना चाहिये कि बालक गर्भ में मर गया है और ऐसी दशामें एक छटांक गौका गोबर डेढ़पाव जलमेंघोलकर पिलावे तो बालक होजावेगा और सांप की कैंचुलीकी धूनी भी उस स्थान में देवे परन्तु चतुर दाई और योग्य वैद्यको बुलालेना चाहिये क्योंकि मरे हुए बालक का पेट से निकालना चतुर दाई का काम है।

गर्भवतीके लिये नौमासका अहारऔरउपाय

गर्भ समयसे बालकके उत्पन्न होने तक सदा सायंकाल और प्रातःकाल नियत समय पर स्वच्छ और कोमलभोजन

× उत्पल को नीलोफ़र भी कहते हैं

* कुमद नीले रँगके फफूल को कहते हैं उसके आसपास की केशर लेवे।

+ काकोली यदि न मिल सके तो मुलहटी देवे सिंघाड़े और कसेरू आदि थोड़े२ देवे अधिक देनेकी आवश्यक्ता नहीं।

करे। इस के अतिरिक्त प्रथम मास में रात्रि के समयबिना किसी औषध के न बहुत गर्म न बहुत ठण्डा। दूसरे और तीसरे महीने में शहत और घी मिलाकर चौथे महीने में एक तोला मक्खन मिलाकर पांचवे महीने में थोड़ा घी मिलाकर छटे और सातवें महीने में मधुर औषधियों से सिद्ध कियाहुआ दूध औरघी इतना पानकरे कि जो जठराग्निको मन्द न करे और अच्छे प्रकार पचजावे।

यदि सातवें मास गर्भिणी के उदर में दाह जान पड़े तो सिरस के फूल ४ माशा धाय के फूल ४ माशा पीत(पीली) सरसों २ माशा और मुलहटी ४ माशा का चूर्णको स्तन और उदर में मालिश करे अथवा कुड़ाकी छाल (जिसको कुरूई भी कहते हैं यह इन्द्रजौ का वृक्ष होता है) ४ माशा तुलशी के बीज २ माशा मोथा ३ माशा और हल्दी ४ माशा इन को कूटकर मालिश करे।

यदि स्तनों में खुजली होतो हाथ से न खुजलावे किन्तु मालती के फूल ६ माशा और मुलहटी ६ माशे को ऽ। पाव भर पानी में औटावे जब छटांक भर बाकी रहे तब उस में कपड़ा भिगोकर धो डाले यदि खुजाये बिना कलही न पड़े तो धीरे २ पोरुओं से सहारा देवे ऐसी दशामें मधुर और वातनाशक भोजन थोड़ी चिकनाई और नमक डालकर देवे और जल भी थोड़ा ही देवे।

आठवें महीने में घी डालकर दूध देवे—नवें महीने में उपस्थ इन्द्रीय पर तेल का फोया रखदेवें—इस प्रकार खान पान व्यवहार करने से स्त्रियों को मल मूत्र सुख पूर्वक होते रहते हैं सन्तान उत्पत्ति में बहुत कष्ट नहीं होता है संतान भी उत्तम होती है।

गर्भाशयमें बालक बनने और रहनेका वृत्तान्त

प्रथम मास में बीज रूप रहता है दूसरे महीने में गाढ़ा होकर पिण्डाकार होजाता है तीसरे महीने में सम्पूर्ण इन्द्रियां और सम्पूर्ण अङ्गावयव एक ही साथ उत्पन्न होजातेहैं इस समय में इस के चित्त में वेदनाओं की उत्पत्ति होतीहै इस कारण गर्भ कुक्ष में फड़कता है इस समय में गर्भिणी के इच्छा के प्रतिकूल कोई कर्म न करे उस काल में गर्भिणी जिस २ वस्तु की इच्छा करे वही २ देवे परन्तु कोई गर्भ नाशक कार्य न करने दे। यदि किसी तीव्र वस्तु पर गर्भिणी का मन चलायमान हो तो भी उसकी इच्छा को न रोककर उस में हितकारी वस्तु मिलाकर देवे क्योंकि उस की इच्छा रोकने से वायु प्रकुपित होकर शरीर के भीतर जाकर गर्भ को नष्ट करदेता है अथवा क़ुरूप कर देता है।

पांचवें महीने में गर्भ स्थित होजाता है इस लिये गर्भिणी का शरीर अधिक भारी होजाता है।

छठे महीने में गर्भ का बल और वर्ण अधिक बढ़जाता है इस कारण स्त्री के बल और वर्ण की हानि होजाती है।

सातवें महीने में गर्भ सब तरह से परिपूर्ण होजाता है इस कारण गर्भिणी स्त्री उस महीनेमें अति मलीनहोजाती है।

आठवें मास में गर्भ के परिपूर्ण होजाने से रस वाहिनी नाड़ियों के द्वारा गर्भ से माता और माता से गर्भ बार २ ओज*को ग्रहण करते रहते हैं इस कारण माता बार २ प्रफुल्लित और बार २ मलिन होजाती है इस समय में अधिक सावधानी से कार्य करना चाहिये।

माता की कुक्षि में गर्भ का मुख माता की पीठ की ओर

रहता है सिर ऊंचे को करके सम्पूर्ण अङ्गोंको सकोड़े हुऐ जरायु में लपटाहुआ पड़ा रहता है। गर्भ की नाभ में एक नाड़ी होती है जिस को नाल कहते हैं वहीं माताके हृदय में लगी होती है उसी के द्वारा गर्भ आहार रस पहुंचता रहता है।

बालक के शरीर में कौन २ वस्तु किस २ से बनती है—

केश—डाढ़ी, मूछ—रोम, हड्डी, नख, दांत, रँग सन नाड़ी और वीर्य यह पिता के अंश से उत्पन्न होते हैं।

मांस, रुधिर, मेदा, मज्जा, हृदय नाभि यकृत (कलेजा) तिल्ली, आंत पायुइन्द्रिय इत्यादि कोमल पदार्थ माताके अंशसे उत्पन्न होते हैं।

शरीर का बढ़ना, बल, वर्ण, स्थित और हानि (घटना) यह रस से उत्पन्न होते है।

आत्मज्ञान, मन, इन्द्रियगण, प्राण अपान प्रेरणा, धारण, आकृति, वर्ण, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, चेतना, घृतिः, बुद्धि स्मृति अहङ्कार और प्रयत्न यह आत्मा से उत्पन्न होते हैं और भक्ति, शील, शौच, द्वेष, मोह, त्याग मात्सर्ग, भय, क्रोध, तन्द्रा, उत्साह, मृदुता, गम्भीरता, और अचञ्चलता से उत्पन्न होते हैं।

प्रसवकाल—

नवें मास के आरम्भ से बारहवें मास तक प्रसव काल कहलाता है इस से आगे पीछे सन्तान आरोग्य और बलवान् उत्पन्न नहीं होती दश मासके पश्चात् की सन्तान बहुत बलवान होती हैं। नौ मास के प्रथम की सन्तान बहुतही कम जीवित रहती हैं।

* सातों धातुओं के सार को ओज कहते हैं।

आसन्नप्रसवा के लक्षण—

जांघ और कमर पीठ में दर्द होता है, पसली के नीचे गढ़े पड़जाते हैं, मल मूत्र बार २ आता है—भोजनों की इच्छा नहीं होती, चलने फिरने को मन नहीं चाहता, मनमें आलस्य—शरीर के नीचे भाग में भारीपन और आंखों में शिथिलता इत्यादि लक्षणों से जानना चाहिये कि प्रसव शीघ्र होने वाला है।

उस में ऐसी स्त्रियों को रक्खे कि जिनके बहुत बार सन्तान हो चुकी हो। जो गर्भिणी से प्रेम रखती हो—जो प्रसन्न चित्त परिश्रम सहनेवाली और कर्म करने में प्रवीण हों। गर्मी की ऋतु में दिन के समय में भीतर मकान में रहना चाहिये और रात को पटे खुले हुये मकान में और जाड़े के दिनों में बन्द मकान के भीतर जहां धूपभी जाती हो रहना योग्य है और वहां आग भी जलती रहे—परन्तु धुआं नहो।

दाई।

तरुण और बलवान् हो, जिसके बड़े नख न हों जो अपने काम में निपुण और निर्भय हो॥

प्रसूता के रहने का स्थान—

इन लक्षणों के प्रकट होने पर प्रसुताको ऐसे मकान में रक्खे कि जो आठ हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा होवे जिसके द्वार पूर्व वा दक्षिण की ओर होवें जिस की दीवारें पुतीं हुई होवें जो स्वच्छ रमणीक और गन्ध युक्त होवे उस में वस्त्र—ओढ़ने—बिछाने के कपड़े अग्नि जल—ओखली और मल, मूत्र त्यागने के स्थानभी होवे इस के अतिरिक्त उसमें

अनेक वस्तुयें ऋतु के अनुकूल होनी चाहिये (अर्थात् शीत काल में सर्दी से बचानेवाली और उष्ण काल में ठंड पहुंचाने वाली इस के उपरान्त राई श्वेत सर्सों, नीव के पत्तेकी धूनी सौर गृह और प्रसूता और बच्चे के वस्त्रों को देना योग्य है।

व्यथायुत गर्भिणी उपचार—

शरीर में तेल लगाकर गर्म पानी से स्नान कर थोड़ी सी मूंग की खिचड़ी खाकर कोमल तकिये और बिछौने के पलंगपर दोनों जांघ फैलाकर बैठ गर्मदूध वा गर्मपानी पीवें या ३ माशे सौंफ और गायका दूध पाव भर और एकसेर पानी को औटावे जब पानी जल जावे, तो गुन गुना पिलावे वा काले सांपकी केंचुली और मैनफल का चूर्ण बनाकर उसका धुआं गर्भ द्वार को दे वा पोईके पत्ते और जड़ पीसकर और इन्द्रायन की जड़ तिल का तेल मिलाकर गर्भद्वार पर रक्खे वारि पीपरी और पानी में पीसकर गर्म कर अण्डी का तेल मिला नाभि पर लेप करे या खोया और साबुन की बत्ती बनाकर लगावें वा चम्बुक पत्थर को जांघ में बांधे वा किसी हुलास से छींक ले वा हीरे की कनी अपनेपास रक्खे अथवा कूट दो माशा, इलायची २ माशा, बच दो माशा, चीता २ माशे और कंजा २ माशे का चूर्ण बनाकर सुंघावे और कमर, पसली, पीठ आदि स्थानों पर सुहाता २ तेल लगावे अथवा वासा की जड़ को पीस नाभि पर रक्खे फिर मीठे शान्तिदायक बचन बोले तो बच्चा शीघ्र होजावेगा और क्लेश कम होगा परन्तु गंडा आदि मिथ्या बातों से कुछ नहीं होता ॥

प्रसव के पश्चात् कर्म–

बालक के उत्पन्न होते ही समय देखे कि गर्भ नाड़ी (नाल) बाहर निकल आया है या नहीं। यदि न निकली होतो एक स्त्री अपने हाथ से प्रसूता की नाभि के ऊपर जोर से दबावे और दूसरे हाथ से पीठ पकड़ कर अच्छे प्रकार हलावे और पांव की एड़ियों को नाभि के पास लावे भोजपत्र, काच, मणि और सांप की कैंचुली की धूनी उपस्थ इन्द्री में देवे अथवा सौंफ, कूट, मैनफल हींग इन को तेल में डाल उस में रुई का फोया भिगोकर उपस्थ इन्द्री में रक्खे तो नाड़ी बाहर निकल आवेगी ॥

नाड़ी छेदन विधि ।

फिर नाड़ी को नाभि से आठ अंगुल छोड़ दोनों ओर पकड़ कर बीच से सोनें चांदी वा लोहे की पैनी धारवाली छुरी से काट डाले फिर शेष नाड़ी में एक डोरा बांधकर नाड़ में ढीला बांध देवे यदि नाभि पकि जाय तो लोध ४ माशा मुलहटी ४ माशा, प्रियङ्गु (खक्खा खदन) ४ माशा, दारुहल्दी ४ माशा, को पीस टिकिया बनाकर एक छटांक तेल में पकावे। फिर उस तेल को नाभि पर चुपड़ता रहे नाड़ी के नियमानुसार न छेदन करने से नाना प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं इस लिये इस पर विशेष ध्यान देवे और अनुचित प्रकार से कट जाने पर यथा योग्य चिकित्सा करावे इस के पश्चात् सोने से बालक की जीभ पर घी और शहत मिलाकर ओ३म् शब्द लिखे और थोड़ासा घी और शहद चटावे फिर उस के कान के पास दो पत्थर के टुकड़ों को बजावे, ठण्डे अथवा गर्म जल से धीरे २ मुख को पोंछे इस

से बालक का प्रसव समय का कष्ट दूर होजाता है और प्राण प्रफुल्लित होजाते हैं फिर मंद २ हवा करता रहे जब चैतन्य हो जावे फिर उस को स्नान कराकर उस के तालु ओष्ठ कंठ और जिह्वा का मार्जन करे इस के अनन्तर नाखून कटी हुई अंगुली में धुली हुई रुई का फोआ लपेट कर तात्वादि स्थानों को धोवे फिर चिकना रुई का फोआ बालक के तालू में लगादेवे फिर नाक फलको ठीक कर देना चाहिये क्योंकि उत्पन्न होने के समय दबने से चपटी होजाती है फिर उपस्थि इन्द्री की त्वचा की सुपारी की खाल को खोल कर ऊपर चढ़ा तेल लगाकर नीचे उतार दे और जो मैल हो उस को धोकर स्वच्छ करदे ॥

प्रसूता की रक्षा

जब बालक होजावे और सब प्रकार से उसकी देख भाल करली जावे उस के पीछे प्रसूता की सुध लेनी योग्य है सब से प्रथम बालक उत्पन्न होने के पीछे स्त्री के पेट में से एक मांस की सी थैली निकलती है उसको औनार कहते हैं जिस प्रकार गाय भैंस के पेट से बछड़ा होने के पीछे जेर गिरता है जब तक वह गिरन पड़े तब तक प्रसूता के पेट पर हाथ रक्खे रहना चाहिये यदि पीर बंद होजावे ओनार न गिरे तो पेट पर हाथ फेरती रहना चाहिये तो थोड़ीदेर में पीर उत्पन्न होकर ओनार गिरपड़ेगी

परन्तु खींचकर न निकालनी चाहिये जैसा कि बहुधा स्त्रियां किया करती हैं ॥

जिस से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं इसी भांति जब कभी मूर्ख दाई भीतर के अंग में हाथ डालदेती है तो उन

के नख की चोट कहीं जरायु में लगजाती है उस से ज्वर आजाता है इस लिये बहुत बुद्धिमान दाई को भी सावधानी से यथा अवसर कार्यवाही करनी चाहिये ॥

यदि ज्वरादि हो तो चतुर वैद्य और योग्य डाक्टर को दिखाना चाहिये ठंडा पानी किसी दशा में भी न देना सर्दी के दिनों में आग भी जलती रहना भला है वरन पसली जमोघा इत्यादि बीमारियां होजाती हैं जिनसे असंख्य जानें यमपुरको चली जाती हैं और बच्चे को गठिया आदि रोग होजाते हैं जिस से उमर भर का सुख चला जाता है ज्वर न हो तो प्रतिदिन के पश्चात् कोमल मूंग की दाल आदि देना चाहिये ॥

इस के उपरान्त ४० दिन तक तेल लगवा कर गरम जल से स्नान करना योग्य है क्रोध और प्रसंग का त्याग प्रसूता के १० दिन तक चरुये का पानी पीना उचित है जिस में ३२ औषधी होती है उस को पानी डाल औटाते हैं वही चरुये का पानी कहलाता है जो बत्तीस औषधी न मिल सकें तो पीपर,पीपरामूल,गजपीपर,मोचरस, चीता, सोंठ और गुड़ इन को पानी में औटाकर पिलावे अथवा दशमूल काढ़ा देवें जिस से शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, दोनों कटेली गोखुरू, बेल की गिरी, अरनी, अरलू पाढ़, कुमेर, पीपल इन सब की बराबर मात्रा लेकर काढ़ा बना पिलाना उचित है यदि इस का अर्क खींचले तो फिर प्रति दिन का बनाना जाता रहे ॥

इसके उपरान्त बच्चाउत्पन्न होनेके पीछे जच्चाको बैठा देती हैं जिस से लोहू बहुतसा निकलजाताहै और स्त्री बहुत कमजोर होजाती है इस से लोहू निकलना अच्छा नहीं ॥

प्रसूता को ३ दिन तक अन्न न देना चाहिये क्योंकि

उन दिनों में भोजनके पचाने की शक्ति नहीं होती इसलिये उन दिनों में दूध देना सब से उत्तम है परन्तु इस देश में हरीरा देती हैं जो घी, गुड़ और अजवाइन को औटाकर बनाती हैं यदि सुहाग सोंठ को बनाकर थोड़ी २ दें और ऊपर से दूध पिला दिया करें तो बहुतअच्छा हो और अगर ऐसा न करें तो सौंठ को पीस छान फंकी करा ऊपर से दूध पिलादें तो बच्चा और जच्चा दोनों को लाभहो फिर जच्चा का सोना भला है इस लिये वहां नाना प्रकार के शब्द न होने चाहियें प्रसूता को लेटे ही धो पोंछकर स्वच्छ कर देना योग्य है फिर सब स्त्रियोंको अलग कर किवाड़ फेर अंधेरा करदे जिससे उसको नींद आजावे इसीभांति आंखों के पलक आदि अंग जो जुड़े हों तो उसको नस्तर से चीर कर प्रथक करदेने चाहियें और गुदा का छिद्र बंद हो तो खोल देना चाहियें और मस्तक लंबा हो तो दोनों हाथोंसे दबाकर सीधा सुडौल कर देना योग्य है, हे सुन्दरियों इस समय की सावधानी से सब अंग ठीक होजाते हैं वरन थोड़ी सी असावधानी से फिर बहुत हानि होती है।

और उम्र भर सुख नहीं मिलता और ज्वरादि न हो तो तीन दिन पीछे पाचन और कोमल भोजन मूंग की दाल आदि देना उचित है छः मास तक पुरुष से समागम न करे जो २ वस्तु गर्भ रहने के समय और उत्तम व्यवहार बताये गये हैं उन पर भी ध्यान बनाये रहे इसमें किसी प्रकार का गडबड न करे वरनः जन्म भर का दुःख होजाता है और निर्बल रहजाती हैं और दूसरे सन्तान भी श्रेष्ठ नहीं होते, सुहाग सोंठसे बच्चा और जच्चा दोनों को आरोग्यता मिलती है और बल बढ़ता जाता है।

सुहागसोंठ की औषधियां—

सोंठ बैदरा	१॥ पाव	बकरी का दूध	५ सेर
घी गऊ का	१ पाव	चीनी	२॥ सेर
दालचीनी	१॥ तोला	तेजपात	१ तोला
छोटी इलायची	२ तोला	नागकेशर	१॥ तोला
स्याह जीरा	१ तोला	सौंफ	१। तोला
अकर करहा	१॥ तोला	जाबित्री	१ तोला
बिधारा	१। तोला	कमलगट्टे की गिरी	१॥ तोला
पीपरामूल	१ तोला	त्रिफला	२ तोला
बरियाराकी जड़	२ तोला	चाव	१ तोला
चीता	१ तोला	मोथा	१॥तोला
खस	१॥ तोला	नागौरीअसगन्ध	२ तोला
सफेद चन्दन	१ तोला	काला अगर	१ तोला
सफेद जीरा	१ तोला	लौंग	१॥ तोला
शतावर	१ तोला	सफेद मूसली	२ तोला
सोंठ	२ तोला	पीपर	१ तोला
मिर्च	१॥ तोला	जायफल	१। तोला
सिंघाड़ा	२ तोला	कंकोल	१॥ तोला
अजमोद	१ तोला	मुनक्का	१ छटांक
किशमिश	२ छटांक	अखरोट	२ छटांक
बादाम	१ पाव	पिस्ता	१ पाव

बनाने की रीति

सब से प्रथम सोठ को कूट छान ले और दूध को कड़ाही में औटावै जब आधा दूध जलजावै तब उस पिसीहुई सोंठको डालदेवे और करछी से बराबर चलाताजावै जिससे दूध न जलजावै और जब खोया होजावै तो कढ़ाई चूल्हेपर से उतार लेवे और अलग कर फिर कड़ाही को रखकर घीडाले

और खूब भून लेवे बाद साफ कड़ाही में चीनी की चासनी बनाले और सब औषधियोंको कूट छानकर मेवाओं को साफ कर कतर सब को खोवा की चासनी में मिला आधी २ छटांक के लड्डू बनालें—प्रातःकाल अपने बलके अनुसार लड्डू खाकर ऊपर से दूध मिश्री को पिये तो बच्चे और जच्चे को किसी प्रकार का रोग नहीं होगा।

स्तन रोग और उसकी चिकित्सा

कन्याओं अर्थात् स्त्री के जब तक गर्भ नहीं रहता तब तक उन के किसी प्रकार के स्तन रोग नहीं होते क्योंकि उस समय तक स्तन सम्बन्धी नसों का मार्ग बन्द रहता है इस कारण वहां कोई दोषभी नहीं पहुंच सकते॥

सम्पूर्ण प्रकारके स्तन रोगोंमें स्त्रीका दूध बिगड़ जाता है यदि बात की प्रबलता होती है तो दूध कसीला हो जाता है और पानी में डालने से पानी के ऊपर तैरता रहता है पित्त की प्रबलता होने पर दूध खट्टा और कड़ुवा होजाता है और पानी में डालने से उसकी पीली २ रेखा सी चमकने लगती है कफकी प्रबलता होने पर दूध में गिलगिलापन होता है और वह पानी के भीतर बैठ जाता है, तब तीनों दोषों को प्रबलता होती है अथवा चोट लगजाती है तो उस में तीनों दोषों के चिन्ह दिखलाई देते हैं॥

निर्दोष दूध की पहचान

जिस स्त्री का दूध जल में डालने से मिलकर एक हो जाय पाडु वर्ण वाला रहे जिस में मीठापन हो और कुछ अन्तर न पड़े जो शीतल निर्मल पतला और शंख के समान श्वेत हो जो झागदार न हो जो पानी में न तैरे न डूबे तो जानना चाहिये कि दूध निर्दोष है॥

इस के उपरान्त जिस दूध के पीने से बच्चे का पेट ही न भरे अर्थात् पीता ही चला जावे और वह दुर्बल होता आवे तो उसको दूषित दूध समझना चाहिये । यदि इससे भिन्न लक्षण दीख पड़े तो ३ तोला नीम के पत्तों को ऽ।≈ पाव पानी में गर्म करके जब ऽ= रहजावे तो उसमें १ तोला शहद और ३ पीपल मिलाकर चार वा छः दिन पिलाकर तीसरे पहर को वमन (कै) करावे और कै हो जाने पर नित्य प्रति मुंग का रस खवावे अथवा त्रिफला ६ माशा और घी १ तोला पान करावे अथवा भारंगी ४ माशा वच २ माशा अतीस ४ माशा देवदारु ४ माशा पाढ़ ४ माशा मोथा ४ माशा मुलहटी ४ माशा और कुटकी ४ माशा इन द्रव्यों का क्वाथ (काढ़ा) पान करावे तो दूधका शोधन होजायगा यदि कै कराना उचित नहो तो गोवी ४ माशा झाऊ ४ माशा देवदारु ४ माशा चिरायता ४ माशा बनफूली ४ माशा कुटकी ४ माशा गुर्च ४ माशा सोंठ ४ माशा नागरमोथा ४ माशा और इन्द्रजौ ४ माशे को ऽ। पानी में औटाकर जब पौन छटांक रहजावे तब पिलावे, इसके अतिरिक्त क्रोध शोक करने वा बालक पर प्रीति न होने पर स्तनों में दूध नष्ट हो जाता है इस कारण माता या दाई को सदा प्रसन्न रक्खे उस को जौ या गेहूं का दलिया शालीचांवल, साठी चांवल, कसेरू, सिंघाड़ा, कमलनाल, बिदारीकन्द, मडुआ-शतावरीनालिका, घी साटी के चावल की खीर हल्दी-पीपरि सोंठ-पिपलामूल—जीरा आदि का हरीरा घी शक्कर की चासनी बना कर देवे या और ऋतु के शाक खिलावे इससे दूध बढ़ जायगा ।

सन्तान न होने के विषय में—

प्रकट हो कि पुरुष स्त्री दोनों तथा स्त्री वा पुरुष में दोष

होने से गर्भ स्थित नहीं होता इसलिये हम संक्षेप से उन दोषों को लिखते हैं जिन को देख भाल कर चतुर और संतोषी धर्मात्मा वैद्य से औषधि करायें और मिथ्या प्रपंचों में अपने अमूल्य समय और धन को न खोयें कि जिनसे सिवायरोगों के असाध्य हो जाने के और कुछ हाथ नहीं आता, उन के अर्थ हम भी कुछ औषधि लिखते हैं ॥

पुरुष के दोष—

(१) धातु में दोष होना, (२) उपस्थेन्द्रिय का टेढ़ा होना, (३) उस के मुख का फैलना, (४) छोटा होना (५) अधिक मोटा होना ।

औषधियां

प्यारे सुजनों ! धातु में दोष बाल्यावस्था में प्रसङ्ग करने अथवा बालकों से कुचेष्टा वा वेश्यागमनादि अति प्रसंग करने और नशों के सेवन से होजाते हैं ।

इन से बचना योग्य है यदि इन से जो २ हानियां होती हैं उनका व्यौरेवार वृत्तांत जानना हो तो मेरी बनाई हुई "वीर्यरक्षा" नामक पुस्तक में देखलें, परन्तु यह भी स्मर्ण रहे जो मनुष्य छोटी अवस्था से इन बातों में फंस जाते हैं उन के सन्तान का होना अति दुर्लभ है क्योंकि उन की मनी अयत्न्त कच्ची होती है ऐसी दशा में सन्तानरूपी रत्न ही से हाथ नहीं धोते वरन शारीरिक सामाजिक और आत्मिक तीनों प्रकार के सुखों से तिलाञ्जुलि दे देते हैं क्योंकि सर्व प्रकार के सुख वीर्यरक्षा से ही मिलते हैं इसलिये २५ वर्ष से न्यून पुरुष को स्वप्न में भी प्रसंग करने का स्मरण न करना चाहिये, देखो यदि सुख की इच्छा हो तो प्रथम

इस व्रत को स्वीकार करो पश्चात् नियमानुसार सन्तान के अर्थ अपनी ही स्त्री से प्रसंग किया करो ॥

स्त्री पुरुष के वीर्य्य दोष परीक्षा-

(१) गेंहू अथवा जौ-व गंगाफल या पेठे के बीजों को स्त्री-पुरुष प्रथक २ बोवें और जब कल्ला निकल आवे तब अपने वृक्ष पर स्त्री पुरुष पेशाब करें फिर जिसके पेड़ों की जड़ सूख जावे उसकी ही धातु में दोष जानना चाहिये

स्त्री की विशेष परीक्षा के लिये-जब स्त्री को क्षुधा लगे तब वह गाय के दूध में कपड़ा तर कर के गुहेन्द्रिय में रखले यदि दूध की गंध मुख में आने लगे तो जान के स्त्री में कुछ दोष नहीं है ॥

उत्तम धातु के लक्षण-

जो निर्मल चमकीली चेपवाली हो और जिसको मक्खी खाती हों वह उत्तम जानों वरनः खराब ।

भाइयो ! इसी प्रकार और भी बहुत परीक्षा और लक्षण वैद्यकशास्त्रों में लिखे हैं जिनको चतुर वैद्य जानते हैं उनसे ही रोगों को शान्ति कराना योग्य है न कि मूर्ख जनों से ।

धातु के दोष दूर करना-

अब हम धातु पुष्ट करने की एक उत्तम औषधी लिखते हैं चाहिये कि ४० दिन तक पथ्याऽपथ्य को विचार सेवन करे और जब आराम हो जावे और अपना पुरुषार्थ रखना चाहें तो स्त्री प्रसङ्ग को सदा ही कम करे अर्थात् नियमानुसार जैसा कि हम लिख चुके हैं और धातु वृद्धिक और पुष्टिकारक औषधी खाते ही रहा करें कि जिससे सदा आरोग्य बनेरहैं क्योंकि वीर्य रक्षा से ही सर्व प्रकार के सुख मिलते हैं ।

औषधी यह हैं—

बीजबन्द १ तोला, पाषाणभेद १ तोला, बैमन सफेद १ तोला, बैमन सुर्ख १ तोला, तूदरी सफेद १ तोला, तूदरी सुर्ख १ तोला, बबूल का गोंद १ तोला, केसर ४ माशे चिये के बीज का छिलका २ तोला, रांगे का कुस्ता २ तोला।

इन सब को बारीक पीस छान सब के बराबर मिश्री मिला कर प्रति दिन सुबह के समय एक तोला चरण को ऽ॥ सेर गाय के दूध के साथ खावे परन्तु गर्म अर्थात् खटाई तेल और जो अपनी प्रकृति के अनुकूल नहीं न खावें, स्त्री प्रसंग से बचना भी योग्य है, तदन्तर विषय के उत्पन्नकर नेवाली पुस्तक और कहानियों और खेल तमाशों और वार्त्तालाप से बचना अभीष्ट है।

यदि पुरुषगामी वा वैश्यागामी वा अति विषय करने से लिङ्ग टेढ़ाहोगया हो उसका अच्छा होने का उपाय यह है।

घोड़ का सुम १ तोला, बीरबहुटी ५ तोला घुंघुची सफेद १ तोला जायफल १ तोला, शेरकी चरबी १ तोला इन सब को बारीक पीस आधपाव अलसी के तेल में जला प्रति दिन दो चार बार लगाकर पान सेंककर बांधना चाहिये इस का लाभ तीन हफ्ते में जान पड़ता है।

उपस्थेन्द्रिय के मुखका फैलना।

ढाक का गोंद १ माशा, बबूल का गोंद १ माशा, पाषाण भेद १ माशा, घुंघुची सफेद १ माशा इन सबको बारीक पीस एक तोला बकरी के दूध में घोलकर कपड़े की बत्ती बनाकर उसमें भिगोकर लिङ्ग के सूराख में रक्खे तो १० दिन में आराम होगा।

अथवा ।

कुन्दर १ माशा मौलसिरीके बीज १ माशा, ढाक का गोंद १ माशा, सालिम मिश्री १ माशा, बेरी की लाख का चपरा १ माशा, इनको पीस इनके बराबर मिश्रीमिला प्रति दिन ८ माशे ताजे पानी से खावे वो दो हफ्ते में लाभ जान पड़ेगा ।

छोटे से बड़ा करना ।

इस स्थान पर यह भी याद रहे कि यह काम जवानी की उमर तक हो सकता है अन्यथा नहीं ।

(१) कटैया के फल मय पत्तों के, सरसोंके पत्ते, कूट कड़वा, खुरासानी अजवायन, इन सब को बराबर २ लेकर पीसकर दूने शहद में मिलाकर दिन में चार बार लेप करे

(२) भटकटैया का फल—बेकावा अनार के फल का बक्कल इन सब का चूर्ण कर कड़वे तेल में पकावे फिर छान करउस तेल को लिङ्ग पर मले तो लिङ्ग बढ़ता है ।

अधिक मोटेसे पतला करना

गर्म पानी से दिन में दो तीन बार धोवे फिर पोंछकर ऊपर से 'बलसां' के तेल को मलकर 'जैतून' के तेलको मले तो १० या १२ दिन में लाभ जान पड़ेगा ।

स्त्री के दोष

(१) गर्भाशय की प्रकृति अति ठण्डी हो, (२) गर्भाशय की प्रकृति अति गर्म हो, (३) गर्भाशय अति मोटा हो गया हो, (४) गर्भाशय का छोटा होना, (५) अति दुर्बल होना, (६) गर्भाशय का न होना, (७)गर्भाशय से पानी आना, (८) गर्भाशय का मुंह फिरना (९)

प्रसंग के पीछे शीघ्र उठ खड़ाहोना (१०) नियमके विरुद्ध होकर चेष्टा करना (११) हिजड़ी हो (१२) घरानि में सूजन हो ।

औषधियां गर्भाशय की प्रकृति अति ठन्डी को दूर करना ।

केसर १ तोला, कस्तुरी ३ रत्ती, बालछड़ १ माशा पीपर छोटी १ माशा, अफयून २ रत्ती, इन सबको बारीक पीसकर एक तोला शहतमें मिलाकर आधी सुबहऔर आधी शाम आठ दिन तक खावे परन्तु ठण्डी चीजों से बचना आवश्यक है ।

गर्भाशय की प्रकृति अति गर्म को दूर करना

(१) शरबत सेब २ तोला, या शरबत चन्दन २ तोला या विलायती अनार के दाने १ छटांक, या अंगूर विलायती १ छटांक प्रति दिन खाना चाहिये ।

(२) एक छटांक तिली के तेल में हरे गुलाब के फूल दो तोले और चमेली के फूल दो तोले और बेले के फूलदो तोले चार या पांच दिन तक गलाकर और उस में कपड़ा तर करके गर्भाशय पर आठ दिन तक लगाना चाहिये ।

गर्भाशय की मुटाईको दूर करने के लिये—

हल्दी ३ माशे को साबुन के लुआब में मिलाकर आठ दिन तक लगावे ।

गर्भाशय को छोटेसे बड़ा करना ।

प्रकृति और ऋतु के अनुकूल जुलाब लेकर लायकडाक्टर वा चतुर वैद्यजीसे जो इस क्रिया में चतुर हो इलाजकरावें

अति दुर्बल होना बसबब न होने रजस्वला के

सोंठ १ माशा, काली मिर्च २ माशा, पीपर २ माशा, हर्र की वकली २ माशे, भारङ्गी ३ माशे इन को कूटछानकर दो तोले गाय के घी में मिलाकर प्रतिदिन १० वा १२ दिन तक खाना योग्य है, परन्तु ठंडी चीजों से बचना चाहिये ।

गर्भाशय के पानी बन्द करने के लिये

चिकनी सुपारी १ छटांक इमली के बीज का छिलका १ छटांक, साठी के चांवलों का आटा १ पाव पहिले आटे को पावभर गाय के घीमें भूनकर उसमें और सब औषधियों को पीस छानकर मिलावे फिर पावभर शक्कर मिलाकर सुबह और शाम आधी २ छटांक खाकर पावभर गाय का दूध पीवे गर्म चीजों और खटाई आदि से पथ्य करना योग्य है ॥

गर्भाशय का मुंह सीधा करना—

इसके लिये चतुरवैद्य व डाक्टरसे इलाज कराना चाहिये ।

प्रसंग के पीछे शीघ्र उठ खड़ा होना—

स्त्री को शीघ्र न उठना चाहिये ॥

नियम के विरुद्ध होकर कार्य्य करना—

गर्भाधान के समय सृष्टिक्रमानुसार पुरुष को ऊर्ध्व रहना योग्य है इसके विपरीत कार्य्य करने से यदीगर्भ होगा तो पुत्री होनेपर उसमें पुत्र के और पुत्र होगा तो उस में पुत्री के आचरण पाये जावेंगे ।

हिजड़ीपन दूर होना—

(११) स्त्रीधर्म होने के पीछे ७ दिन तक दो माशे

हाथीदांत का चूर्ण बराबर की मिश्री मिलाकर खाय ॥

धरनि की सूजन दूर करना—

हथेली भर अजवायन फांके ॥

प्रसव होनेकेसमय से दोवर्ष तकउपयोगीशिक्षा

जब बालक का जन्म हो तब दाई आदि चतुर स्त्री बालक के शरीर का जरायु पथक कर प्रथम नाक के नथुने स्वच्छ करे जिससे स्वांस अच्छे प्रकार से ले सके फिर नाक के पांसे को ठीक करदेना चाहिये क्योंकि उत्पन्न होने के समय दबने से चपटी होजाता है फिर उसकी उपस्थेन्द्रिय की सुपारी की खाल खोल ऊपर को चढ़ाकर तेल लगाकर नीचे उतारदे और जो मैल हो तो धोकर स्वच्छ करदें और पेडू को दबा पेशाब की बूंद निकाल दें, पाखाने के स्थान को देख भालकर ठीक कर फिर सरसों वा जैतून के तेल को हाथसे लगाकर रुई से पोंछकर ऊन के कपड़े वा बहुत सी रुई पर सुलाकर "नाड़" को धीरे २ सूंतकर चार अंगुल छोड़कर डोरा बांधे फिर उन दोनों के बीच में पैनी छुरी से चतुरता के साथ काटले इस के पीछे गुनगुना पानी जिस में एक या दो या तीन माशे खारी नोन पड़ा हो कोमलताई से स्नान करावे और नाक कान में पानी नजाने पाये पीछे गाय के शुद्ध घी में शहद मिलाकर उङ्गली डुबेकर उसकी जीभ पर लगादें जिस से उसके पेट का मल निकल जावे फिर बालक को ऐसे मकान में पालन करें जहां बहुत प्रकाश और वायु का बल न हो, इस के पीछे बालक को कभी २ धीरे २ हिलाया करें और बाहर की हवा और प्रकाश दिखाना चाहिये

और ५ या ६ दिन तक प्रसूता को अपना दूध न पिलाना चाहिये क्योंकि उस के दूध में उन दिनों एक प्रकार का बुरा रुधिर रहता है इस लिये बकरी या गाय के दूध में थोड़ा पानी मिलाकर गुनगुना करके रुई के फोये से देना चाहिये ताकि मुंह को किसी भांति क्लेश नहो और बालक को दूध का स्वाद मालुम होजावे वरन १ तोला गुड़ और थोड़ी सी अजवायन मिलाकर जल में औटाले फिर छानकर देवे और ४० दिन तक बालक को प्रति सप्ताह स्नान कराना योग्य है परन्तु यह भी स्मरण रहे कि पानी गुनगुना हो यदि गर्मी के दिन होंतो सन्ध्या के चारबजे और शर्दीके दिन होंतो दिनके बारह बजेपर माता या चतुर दाई जब बच्चा सोकर उठे उसके एक घंटे पीछे स्नान करावे और पानी धीरे २ थोड़ा २ डाले जिससे बालक रोने न पावे फिर सफेद कपड़े से धीरे २ पोंछे स्वच्छ वस्त्र पहनावे परन्तु इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक हैकि कपड़े तंग न हों कि जिस से शरीर की बाढ़ को रोके और बच्चे को क्लेश दें, और इतने ढीले भी नहों जो बालक के हाथ पैर हिलाने से फंस जांय जाड़े के दिनों में रुई या पशमीने की टोपी या कनटोपेसे कानतक दाबे रहें चौथे या छटेदिन जब मलिन होजावे तुरन्त उतार डालें और दूसरे पहना देवें शरीरको नङ्गा न रक्खें और सरसों या तिल का तेल प्रति दिन १० बजे के इधर उधर लगाना चाहिये जिससे चमड़े और शरीर में बल हो बच्चे को मा का दूध ४० या इससे अधिक दिन तक नहीं पिलाना चाहिये क्योंकि प्रसूता का शरीर उन दिनों निर्बल होता है इस हेतु उस के दूध मेंभी

निर्बलता होती है, इस लिये माता का दूध पिलाना बर्जित है, ताकि प्रसूताका शरीर भी हृष्ट पुष्ट होजावे नहीं तो मा का दूध बहुत उत्तम और लाभ कारी है, इस लिये इन दिनों में दायी का दुग्ध पिलाना योग्य है और दाई की उमर २० या ३० वर्ष के लगभगहो जो उत्तम सुभाव शीलवती सुन्दर शोभायमान् वलिष्ठ और रोग रहित हो और जिसको बच्चा जने छः महीने या ४० दिन हो गये हों उसका दूध पिलाना चाहिये परन्तु माता की सब प्रकार से दायी पर दृष्टि रहे और उस को भोजन आदि अति गुणदायक जो बल बुद्धि निरोगता के देने वाले हों खिलाना चाहिये, जिस से बच्चे के शरीर में बल बुद्धि आदि उत्तम गुणों का प्रवेश हो और इस से परिश्रम कम लेना चाहिये दूसरे दायी को इस दशा में प्रसङ्ग करने से वर्जित करें, सदा शरीर और वस्त्र को स्वच्छ बनाये रहे ।

और जो मनुष्य दाई का प्रवन्ध न करसकें तो उनको गौ के दूध के समान पानी मिलाकर पिलाना चाहिये बासी दूध बालक को कदापि न दे और जब उदर रोग होजावे तब आधा दूध और आधा पानी थोड़ा सा बहेड़ा सोंठ वा जल के साथ उबाल कर जब दूध रह जाय उसी दूधको पिलाना चाहिये और जब अजीर्ण हो तो दो चार बूंद चूने के पानी को मिलाकर देना उचित है और जो बालक दूध न पीताहो तो उस की जीभ में सेंधा नमक, आंवला, शहत घी, हर्रको पीस लगाना चाहिये ॥

फिर ज्यों २ बच्चे की अवस्था बढ़ती जावे त्यों २ दूध कम करती जाव और नियत समय पर पिलाने का स्वभाव डालें उस से दूध अच्छे प्रकार पचेगा और समय पर भूक

लगेगी भारतकी देवियां प्रति समय बच्चे को दूध पिलाती रहती हैं चाहे बच्चा किसी प्रकार से रोताहो वह उस को भूखा ही समझती हैं और दुग्ध पिलातीं हैं परन्तु यह रीती अत्यन्त हानिकारक है, तीन महीने के पीछे बार २ रात्रि में दुग्ध पिलाना छोड़दें अर्थात् १० वजे रात्रि के दुग्ध पिलाकर सुलादें फिर प्रातःकाल ४ बजे उठा कर पिलायें, ज्यों २ बच्चे की अवस्था बढ़ती जाय त्यों २ दुग्ध कम करती जावें जिस से बच्चे या दाई या माताको किसी प्रकार का क्लेश न हो, यदि बच्चे की स्वास्थ दशा उत्तम हो तो ९ या १० महीने के बीच में दुग्ध छुड़ा कम करतीं जायें और बच्चा निर्बल हो तो १८ या १९ महीने में दुग्ध को छुड़ावें ॥

जब बच्चा छः सात महीने का हो जाता है तो उस दशा में संसारी भोजनों की आवश्यकता होती है उस समय की निम्न लिखित बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है—

१—बर्त्तन स्वच्छ और पवित्र हों ।

२—अन्नादि पहिले स्वच्छ कर लेना चाहिये ।

३—अच्छे प्रकार रन्ध जावे अर्थात् कच्चा न रहे ।

४—भोजन बलिष्ठ और आरोग्यता के देनेवाले हों जैसे गर्भिणी स्त्री के अर्थ लिखे हैं ।

५—थोड़ा २ खिलावें जिससे पाचन हो जाय ।

बहुधा माता के विकारी दुग्ध पीने से बच्चों के मुखपाक अर्थात् मुंहां हो जाता है, वह दो प्रकारका होता है एक सफेद दूसरा लाल ।

सफेद मुहां

जब बच्चे के मुंह में सफेद मलाई सी जमी और फटी फटी सी वस्तु दीख पड़ती है उस को सफेद मुहां बोलते हैं जिस में मुख से लार बहुत गिरती है ।

लाल मुहां

जब बालक के मुख में लाल दाने या छाले पड़जाते हैं उस को लाल मुहां बोलते हैं।

सफेद मुहांकी औषधि—

(१) सफेद कत्था ६ माशे शीतल चीनी १० दाने काफूर १ रत्ती तीनों पानी में पीस अंगुली से मुख में लगावें।

(२) पीपल की छाल और पत्र दोनों सुखाय बराबर ले कूट छान कर एक रत्ती के अनुमान दिन में चार पांच बार शहद के साथ चटावें।

(३) छोटी इलायची के दाने २ माशे, कत्था सफेद २ माशे, हाथी दांत जलाहुआ २ माशे, इन सब को बारीक पीसकर थोड़ा २ मुंह में डालें।

(४) कत्था सफेद २ माशे को ६ माशे भेड़ के दुग्ध में पीस कर थोड़ा मुंहमें डालें।

लाल मुहां की औषधि—

त्रिफले को पावभर पानी में ओटाकर उस पानी में रुई भिगोकर दिन में तीन चार बार मुख धोया करे माता को पथ्य से रहना योग्य है।

दांत—

प्रकट हो कि दांतों के निकलने के समय बच्चों को बड़ी २ कठिनाइयां उठानी पड़तीहैं इसलिये माताको निम्न लिखित चिन्होंसे परीक्षा करके उपाय करना चाहिये जिससे क्लेशनहो

१-मुंह से राल गिरती है।
२-मसूड़े गर्म और सुर्ख मालूम पड़ते हैं।
३=बच्चा अपनी उंगलियों को चबाता है।
४=प्यास के कारण बारम्बार दूध पीता है परन्तु दर्द के कारण शीघ्र छोड़ देता है।
५=दस्त और कै भी आने लगती है।
६=बच्चा रोता है और गाल सुर्ख हो जाते हैं।

जब ऐसा हो तो उसी दिनसे धीरे २ अन्न के भोजनों को न्यून करे और दूध अधिक करती जावें यहां तक कि उसका पालन दूध ही पर होने लगे, और मसूड़ों पर शहद और नोंन को मिलाकर दूसरे तीसरे दिन मले, या बाबूना के फूल को थोड़ा गर्म करके मसूड़ों पर मले, और मुलेठी कुचलकर बच्चे के हाथ में देदे जिसको वह चूंसता रहे और दर्द कम होजावे, यदि दर्दकी अधिकता हो और इस उपाय से कुछ लाभ नहो फिर किसी बुद्धिमान डाक्टर को बुला कर मसूड़ों को चिरवा देना योग्य है, और कुछ सन्देह किसी प्रकार का न करें क्योंकि इस उत्तम रीति से दो चार दिनतो क्लेश रहता है फिर किसी प्रकार की हानि नहीं होती शीघ्र आरामहोजाता है, और इन दिनों में बच्चों को गर्म टोपी न पहनाना चाहिये यदि गर्मी के दिन हों तो सिर को गर्म पानी से धोना उत्तम है, और जब उत्तम दशा में दस्त अधिक हों तो बेल के गूदे में मस्तगी मिला कर देना उचित है, और सदा इस बातका स्मरण रक्खे कि बच्चों को कभी कब्ज अर्थात् अफरा नहो इसलिये यही मुनासिब है कि दूसरे तीसरे दिन घुट्टी देदिया करें, घुट्टी की दवा यह है–

पोंदीना ४ रत्ती, सोंफ ४ रत्ती, मरोरफली ४ रत्ती, सोंठ २ रत्ती, अमलतास ४ रत्ती, पलासपापड़ा ४ रत्ती, पित्तपापड़ा ४ रत्ती, उन्नाब १ रत्ती, जीरा सफेद४ रत्ती नरकचुर २ रत्ती, सनाय ४ रत्ती, सुहागा २ रत्ती काला नोन ४ रत्ती ।

यह औषधि प्रत्येक ऋतु के लिये लाभदायक है, जब घुट्टी लेने को जावे तो योग्य है कि प्रत्येक औषधि को-तोल २ करलेवे और प्रत्येक को देख भाल स्वच्छ कर मिलावे क्योंकि बहुधा दूकानदार कम मूल्य देने से अर्थात् खराब और कुछकी कुछ कमती बढ़ती दे देते हैं जिस से लाभ नहीं होता वरन नाना भांति से हानि हो जाती है, बच्चे की घांटी को बुद्धिमान दायी से उठवाकर फिटकरी को महीन पीसकर शहदमें मिलाकर कौवे पर लगावे, वा माजू को सिरके में पीसकर तालूपर लगावें, वा शिर धोने की मिट्टी को जलाकर सिरके में मिलाकर तालू पर रक्खे, और बच्चा पैदा होने के पीछे २४ घंटे तक मल मूत्र का त्याग न करे तो ऐसी दशा में चतुर और योग्य हकीम को तुरन्त दिखलाना चाहिये और अच्छे बच्चोंके पाखाने का रंग पतला और हरा होता है, ओर दुर्गन्ध भी कम आता है, यदि इस में कुछ उलट पलटहो तो शीघ्रही किसी चतुरवैद्य को दिखलाना चाहिये,परन्तु यहभी स्मरण रहे कि भोजनों के खान पान से मल दुर्गन्ध आने लगता है यदि बच्चे को अजीर्ण हो तो दस्तों की औषधि न दें, और उस जगहपर गुलाब को शहदमें मिलाकर दो तीन बार करके थोड़ा २ पिलावें तो शीघ्र ही आराम हो जावेगा, इसके उपरान्त बच्चे को तीन बार दिन में नियत समय पर पावों पर बैठावें कि जिससे बिस्तरों पर मलमूत्र त्याग न करे, फिर जब बच्चे

को मल मूत्र की आवश्यकता होगी तो वह किसी इशारों से अपनी मा आदि को समझा दिया करेगा, इस रीति से बच्चे को पांच छः सप्ताह तक खूब सोने दे जबतक कि वह आप न जगे न जगावें और जब आठ नौ सप्ताह हो जावें तब नियत समय पर सुलाने का स्वभाव डालें जिस से रात्रि को माता की नींद में कुछ हानि न हो, बहुधा स्त्री सोने से जगा देती हैं, इस दशा में बच्चा सम्पूर्ण दिन रो २ कर काटता है और जिस स्थान पर वह सोता हो वहां चिल्लाहट न करें बहुधा स्त्री सोते हुए बच्चे की मिट्टियां लेती हैं यह बात भी अनुचित है और सोने से बच्चे का शरीर प्रफुल्लित होजाता है, मन प्रसन्न रहता है ऐसी दशा में बच्चों को अचानक न जगाना चाहिये, इस के उपरान्त बहुधा स्त्री बच्चे को सोने के अर्थ अफीम खिलाने का अभ्यास डालती हैं, यह अयोग्य बात है, इस से उन की आरोग्यता में अन्तर पड़जाता है, और जरा से अधिक दे देने से उन के जीवन में अन्तर पड़जाने का भय होता है।

पसली, जमोघा, और सूखा.

प्रकट हो कि बालकों को जो २ बीमारियां होजाती हैं उन का मूल कारण माता के दुग्ध में बिकार का होना है, यदि माता सदा पथ्याऽपथ्यानुसार भोजनादि और व्यवहार करे तो कदापि बालक रोगों से पीडित न हों और न ऐसा रोगों का रोना मचे जैसा कि मचा रहता है, तिस पर तुर्रा यह है कि यहां के निवासी बहुधा बालकों के रोगों में झाड़ा फूंकी उतारे आदि लोहार, बढ़ई, डोम, चमार, काछी लोधे कसाई आदि से कराया करते हैं कि जिन से हजारों बच्चे परमधाम को चले जाते हैं, जिन के प्राण त्यागने पर माता

पिता की जो दशा होजाती है उसका हम वर्णन नहीं कर सकते, इस लिये प्यारे भ्रातृगणों इन मिथ्या प्रपंचों को त्यागो और इन सब बीमारियों में चतुर वैद्यों से ही औषधि कराओ, हक्लावक्ला न बनो कि जिस से हानि के अतिरिक्त कुछ भी लाभ नहीं होता ।

पसुली

बालकों की हांफी को पसुली की बीमारी कहते हैं, इस बीमारी में यकायक बालक खेलते हुए आंखें पलटने लगजाते हैं मुख का रंग बदल जाता है मानों चलने का सामान होजाता है, यदि उनको वायु लगे और कुछ पानी छिड़काजाय तो होश में आजाते हैं, परन्तु यहां की तो स्त्रियां मूर्खता के कारण चारों ओर से घिरजाती हैं हाय २ कर झाड़ा फूंकी भांति २ से करने लगजाती हैं, कहीं लाल मिर्चों की धूनी, कहीं जूते में आग लगादेती हैं और कुत्तेकी पसली जलाकर उस का धुआं बच्चे की पसली को देती हैं और उसी के टुकड़े को अपने द्वार की चोखट के नीचे और चौराहे में गाड़ देती हैं, आटे की पसुली बनाकर कुत्ते को खिलाती हैं सच तो यह है कि बालकों को आप मार डालती हैं, पितादि को भी सिड़ी बना लेती हैं, उस बेचारे का नाक में दम कर देती हैं, हा शोक! हा शोक !! हा शोक !!! हे मनुष्यों ! क्या इसी का नाम मनुष्यता है जो मनुष्यों के सत्संग में रहने पर भी स्त्री अज्ञान ही रहे ? यह केवल हमारी और तुम्हारी ही भूल है जो उन के सुज्ञान होने की ओर ध्यान नहीं देते जिस के कारण हजारों मनुष्य बे सन्तान रहजाते हैं हे दैव ! आपही कृपा कर भारतवासियों के नेत्र खोलदीजिये ।

हे बन्धुवर्गो और प्यारी बहनों ! यह बीमारी ऐसी नहीं है कि जिस से बालक मर ही जावें, हां उपरोक्त अज्ञानता के कारण कुछ की कुछ औषधि देने आदि के सबब मरजाते हैं।

यह रोग दो प्रकार से होता है, एक तो वायु पित्त के कोप से और दूसरा वायु से, इस लिये दोनों का लक्षण लिखते हैं।

वायु पित्त के लक्षण—दस्त पतला हो, पेशाब कम और गर्म हो, प्यास के कारण होठ चाटे, दूध भी कम पिये, सिर को बार २ घुमाये, हाथ पैरों को अक्सर तन्नाये

वायु के लक्षण—मल के सूख जाने से पाखाना नहीं होता, पेट फूल भी जाता है, पेशाब भी कम हो, नाक के छेद सूख जायें, और नाक की राह स्वांस भी कम आये, पेशाब का मुकाम कुछ भीतर को सिमट जाय, मुख की रङ्गत सफेद होजाय, नाक की ओर बार २ हाथ चलावे।

औषधि बात पित्तकी—

प्रथम दस्त को गाढ़ा करने के लिये जंगली बेल का पका हुआ गूदा २ माशा, धाय के फूल १ माशा, जमनी की गुठली १ माशा, मस्तगी २ माशा, मिश्री ८ माशा, पीस कूट छान कर १४ माशे की खुराक और दिन में ९ खुराक कुए के ताजे पानी में दो २ माशे घोलकर दे और माता को कड़ी वस्तु अर्थात् रोटी और पुरी आदि न खाना चाहिये वरन पुराने चावल और मूंग की दाल बराबर २ लेकर अच्छी खिचड़ी बनावे कि जिस में पकने के समय ६ माशे अदरक को काटकर डाल देना भी योग्य है खाना चाहिये और पेशाब खुलकर होने के लिये खरबूजे

की मींगी ९ माशे इलायची सुर्ख के दाने एक माशे, पीसकर इनकी दो खुराक कर पानी में घोलकर दें।

औषधि वायु की—

गुलकन्द ४ माशे, शाहपसन्द १ माशा, इलायची सुर्ख के दाने १ माशा—इन सबके चार भागकर सुबह से ८ बजे तक खिलाना चाहिये, यदि इस से पाखाना खुलकर न आवे तो जलापा एक माशा गुलकन्द चार माशे मिलाकर गर्म पानी में घोलकर दें।

लेप—

अमलतास का गूदा २ माशे, काला नमक एक माशा इन दोनों को पानी में घोलकर गर्म कर बार २ पेट पर लेप करे तो भी पाखाना खुलकर हो जावेगा।

पसली पर लेप—

बारहसिंहा, सोंठ, अफयून—इन सबको एक २ माशा लेकर घिसकर गुनगुना कर पसुली पर लेप करें।

जमोघा—

जब माताके दूधमें विकार होजाता है और उस विकारी दुग्ध के पीने से बच्चे के भेजे के प्रथम भाग में एक शुद्दा पड़ जाता है और कुदशा होजाती है, बच्चों को यह बिमारी ऐसी है जैसी तरुणों को मृगी, और जब तीनों भागों में शुद्दा पड़जाता है तोवह बच्चे मरजाते हैं हमारे देशके बहुधा जन उसको भूत प्रेत समझ कर गण्डे तावीज झाड़ा फूंकी में लगे रहते हैं, कोई बन्दर लाकर बांधते हैं, कोई बन्दूक छुड़ाते हैं कोई उतारे उतारते हैं, इसी प्रकार सैकड़ों प्रकार के अनुचित व्यवहार करते हैं और मुख्य बीमारी कीकुछ

चिन्ता नहीं करते यहां तक कि तीनों भागों में शुद्द पड़जाते हैं इस लिये सर्वजनों को उचित है कि जब कभी यह बीमारी बालकों को हो उसी समय किसी योग्य वैद्यसे उपाय करावें, और बहुधा इसी बीमारी के अन्त पर सूखा की बीमारी भी होजाती है और पथक् भी सूखा की बीमारी होती है, दोनोंके लक्षण देखकर औषधि कराना योग्य है।

जमोघा के लक्षण–

(१) जीभ के नीचे की नसें हरी जान पड़ती हैं।
(२) स्वांस अच्छे प्रकार से नहीं आती जाती हैं।
(३) नींद कम आती है।
(४) मुखड़े पर सफेदी आती जाती है।
(५) पेशाब सफेद होता है।
(६) आंखों के पलक जल्दी खोलता मारता है।
(७) मुंह से फुसकर निकलते हैं।

सूखा के लक्षण–

(१) कान ठण्डे रहते हैं।
(२) तालू दब जाता है।
(३) पेशाब कम आता है।
(४) जीब चटकती है।
(५) हथेलियां गर्म रहती है।

इनके दूर करणार्थ कुछ औषधि भी हम यहां लिखते हैं–

(१) मोती अनबिंधे एक माशा, वंशलोचन एक माशा, कछुएकी खोपड़ी सूखी एक माशा, सफेद इलायची के दाने एक माशा–एक पैसाभर अर्क केवड़ा में खरल करके मूंग की बराबर गोली बनाकर प्रातःकाल एक गोली दें।

(२) सफेद इलायची के दाने ३ माशे, केसर ६ माशे मोती ४ रत्ती, बंशलोचन ६ माशे—एक छटांक शहद की चाशनी कर इन सब औषधियों को डालकर रख छोड़ें और प्रातःकाल ४ रत्ती प्रति दिन दें।

प्रलेप—

कछुए की खोपड़ी ३ माशे, केसर १ माशे, अफीम ९ माशे, इन सब को एक छटांक तिली के तेल में जलाकर छानले और ८ या १० दिन तक शरीर पर मले।

नोट—

ऐसे बच्चों के कण्ठ में ऊदसलीब को लटकादेवें या मूंग की लकड़ी से दोनों भौंहों के बीचमें दाग दें

बिस्फोटक अर्थात शीतला—

सम्पूर्ण बालकों को एक रोग हुआ करता है जिससे सम्पूर्ण शरीर पर छोटी २ फुंसियां फफोलों की आकृति में उत्पन्न होजाती हैं जिसको हिन्दू बिस्फोटक मुसलमान चेचक और अङ्गरेज 'इस्मालपाक्स' कहते हैं, यह एक ऐसा दुष्ट रोग है कि जो इस में फंसता है वह मानों मृत्यु से संग्राम करता है, यदी इससे बचगया तो मानों नवीन जन्म धारण किया परन्तु स्मरणार्थ ऐसे चिन्ह पडजाते हैं जो जीवन भर नहीं जाते और बहुधा अङ्ग भङ्ग होकर अन्धे लूले लंगड़े बहरे हो जाते हैं कि जिसके प्रभाव से उनका जीवन ही निष्फल हो जाता है।

जिस गृह में यह रोग होता है उसकी वायु बिगड जाती है जिस से अन्य पुरुषों के जीवन में भी हानि होतीहै, परन्तु महान शोक का स्थान है कि इस समय इस भारत के बहुधा

निवासी इस रोगको एक देवी मानते हैं कि जिसकी पूजा के अर्थ माली चमार आदि मंत्र तन्त्र और नीम की डाली हिलाते और चौराहों में शर्बत चढवाते हैं और कहते हैं कि देवी प्रसन्नहो जायगी सो यह पुजारी हमारे भाइयों को खूब लूटते हैं और उनके गृहों में जाकर खूब सिर हिलाते हैं और कहते हैं कि हमारी भेंट चढ़ाओ में देवी हूं तुम्हारे बालक शीघ्र अच्छे होजांयगे नहीं तो भेट ले जाऊंगी जहां ऐसी ऊट पटांग बात सुनाई हक्काबक्का हो चकित रहजाते हैं उस समय तन मन धन से उन पुजारियों की सेवा में वस हो जाते हैं और किञ्चित् बिचारांश नहीं करते, यदि दैवयोगसे अच्छा होगया तो सम्पूर्ण आयु अच्छे प्रकार चैन से उडाते हैं वरन् उनकी कुछभी हानि नहीं होती।

हे प्यारे भाई बहिनों यह एक प्रकार का रोग है और रोग दूर करने के अर्थ परमेश्वर ने औषधियों को बनाया है सो इस समय झाड और छू मन्त्रों में फंसकर रोगोंको असाध्य कर देते हैं कि जिसके कारण अनेक बच्चे परमधाम को चले जाते हैं और नाना भांति से क्लेश उठाते हैं और द्रव्य का सत्यानाश मारते हैं, और माली आदि अज्ञानी शठ जो हमारे तुम्हारे यहां आकर पुजारी बनते हैं वह अपने घरके बाल बच्चों को क्यों नहीं बचा लेते, जब वह अपनी प्यारी सन्तानों पर कुछ नहीं कर सकते तो हमारे और आप के यहां क्या कर सकते हैं।

देखो अंगरेज मुसलमानों के यहां भी तो यह रोग होता है वह शीघ्र औषधि कर अपनी सन्तानो को आराम कर लेते हैं और आप सुख में रहते हैं, क्या खूब इस के बिपरीत

नेत्रों से देख भाल कर भी हम नाना प्रकार के कारागार में गिरते चले जाते हैं और अपार दुःखों को उठा रहे हैं।

यह रोग गर्भाधान से ही प्रत्येक बालक के पेट में रहता है क्योंकि जब स्त्री रजस्वला नहीं होती और गर्भ रह कर रक्त बन्द हो जाता है उस रक्त की गर्मी बालक के पेट में रहती है जब वह पृथ्वीपर आता है तब समय पाकर वह अपना प्रकाश करता है, इसके नाश करने के अर्थ वैद्यों ने हिन्दुस्तानी टीका निकाला है जिसको 'भेद' कहते हैं इससे बालक तो बच जाता है परन्तु उसको क्लेश बहुत होता है, सो अब सरकार के चतुरवैद्यों ने टीका लगाने की ऐसी सुगम रीति निकाली है कि जिससे किसी प्रकार की हानि नहीं होती जो इस समय में प्रचलित है, सो आपभी इस टीके को प्रसन्नता पूर्वक अपने बालकों के लगवाया करो जिससे आनन्द हो और सन्तान मृत्यु आदि कठिन क्लेशों से बचे, माली आदि के बुलाने से हानि के उपरान्त कुछ लाभ नहीं होता।

बिशेष प्रार्थना—

प्रकट हो कि धातु में दोष होने के अनेकान कारण हैं परन्तु बिशेष यह है—न्यून अवस्था का बिवाह वा रंडीबाजी लौंडेबाजी वा अति बिषय का करना जिनसे बीर्य्य पतला हो जाता है जो अनुचित समयों पर निकलता रहता है जिस को प्रमेह कहते हैं ऐसे पुरुषों को स्त्री के समागम में आनन्द नहीं आता अर्थात् स्पर्श करते ही स्खलित होजाते हैं, ऐसे ही बलहीन पुरुषों के वीर्य्य से सन्तान का बीज नहीं जमता जिसके दूर करणार्थ हजारों रुपये की बिलायती औषधियां हमारे देशवासी खाजाते हैं जिनसे तनक भी आराम नहीं

होता क्योंकि वह हमारी प्रकृति और पवन पानी के अनुकूल नहींहै तिसपर भी धर्मकर्म में धब्बा लगजाताहै, हे प्रयवरो! क्या उन दवाइयों को अङ्गरेज लोग नहींबनाते जो शौच के नाम कागज से साफ करते हैं और मल मूत्र त्याग करने पर भी हाथ नहीं धोवे ? इस के उपरान्त फासफर्स की गोलियों में गाय, सुअर, गदहा और आदमियों की हड्डियों ही का तो सत्त पड़ता है क्याइसी का नाम धर्म रक्षा है।

इस लिये प्यारे सुजनों इन नाना भांति की बीमारियों से आरोग्यता प्राप्त करने के अर्थ अपने ही देश के पूर्ण विद्वान् वैद्यों से औषधि कराया करो जैसा कि वर्त्तमान् समयमें श्रीयुत पं० जगन्नाथशर्म्मा राज्य वैद्य इलाहाबाद निवासी आदि हैं

स्त्री और पुरुषको बलवान् करनेवाली औषधि.

इलायची सुर्ख के दाने ६ माशे, इलायची सफेद के दाने ६ माशे, तगर ६ माशे, सौंठ ५ माशे, बंशलोचन १ तोला, सालिब मिश्री २ तोला, सकाकुल २ तोला, मूसली सफेद ४ तोला, सेमर का मूसला १ तोला, केशर ६ माशे चोबचीनी १ तोला, बादाम की मींगी आधी छटांक-इन सब को पीसकर उसके बराबर मिश्री मिलाले और २ तोले प्रतिदिन गाय के दुग्ध के साथ ४० दिन तक खावें।

स्वप्न दोष के दूर करणार्थ—

गोंदनी के पक्के फलों को सुखाकर ३ माशे ले और बबूलका गोंद ६ माशे और कौंचकेबीज ६ माशे, इन सब को पीस उस के बराबर मिश्री मिलाकर दो तोले आधसेर गाय के दुग्ध में प्रति दिन खाये।

भूख खुलकर लगे

गुलाब के फूल ९ माशे, नागरमोथा ९ माशे और तगर बालछड़, इलायची सफेद तथा सुर्ख, कचूर ये सब छः छः माशे, और लौंग जावित्री केशर दो २ माशे, इन सब को पीसकर सब के बराबर मिश्री मिला प्रति दिन सुबह शाम आठ २ माशे खावें।

बच्चों की खांसी

(जो सर्दी से हो)

दारचीनी ४ रत्ती, लौंग १ अळसी ४ रत्ती, काकड़ासिंगी २ रत्ती, इन सबको पीसकर एक तोला शरबत ख़शख़श में मिलाकर दिनरात में चार बार चटावें।

(जो गर्मी से हो)

रुब्बुलसूस १ रत्ती, बबूल का गोंद ४ रत्ती, इलायची सफेद के दाने ४ रत्ती, अफीम १ रत्ती, शहत ९ माशे, इन सब को मिलाकर दिन रातमें पांच छः बार चटावे।

भगन्दर—

बालक के भगन्दर चाहे बाहिर्मुखबालाहो चाहे अंतरमुखबाला हो उस के लिये विरेचन, अग्निकर्म शास्त्र, क्षार कर्म अहित हैं केवल मृदु और तीक्ष्ण औषधियों को काम में लावें॥

अमलतास, हल्दी, अहिंस्रा इन के चूर्ण को शहत और घी में सानकर उस में सूतकी वत्ती को लपेट कर व्रण में लगादे यहव्रण शोधक में हितहै। यह योग भगन्दर को ऐसा शीघ्र अच्छा करदेताहै जैसे वायुमेघ की गतिको करदेते हैं॥

॥ इति॥

समाज में सुनाकर मुझको कृतार्थ करें क्योंकि इस से उनको मालूमात का ख़ज़ाना हाथ आयेगा यदि आपको फिर से समस्त भारत देश में वैदिक धर्म के सूर्य्य का प्रकाश करना है ।

तो

कृपा करके अपनी २ गृहणियों को अवश्य पढ़ाइये सुनाइये जो पुराणों के लेखों पर मोहित होकर तन, मन, धन न्यौछावर कर पुरुषों को वैदिक सिद्धान्तों से गिरा देती है प्रिय सज्जन पुरुषों ! इस के लिखने का ढंग बड़ा ही प्रिय और भाषा सरल और रोचक है एक बार आपने हाथ में ली तो बिना समाप्त किये कभी हाथ से न रक्खेंगे तिसपर ।

बड़ा लुत्फ़ यह

हाथ आवेगा कि मजे के साथ किताब को बगल में देकर सनातनी पं० साहिबान से शङ्का समाधान कर अपने चित्त को शांति कीजिये और सनातनी भाइयों को यह लाभ होगा कि जिन्होंने अठारह पुराणों के कभी दर्शन नहीं किये उनको उनकी मालुमात होगी फिर वह उन पर विचार कर सत्यासत्य का निर्णय कर सत्यधर्मके अनुयायी होकर भारत सन्तान का उद्धार करेंगे । इसकी प्रशंसा में अनेकान पत्र आते हैं उन में से हम कुछ आपकी भेट करते हैं इनको आप ध्यान देकर पढ़िये विचारिये कैसी जरूरी पुस्तक है और किस परिश्रम से लिखी है ।

श्रीपण्डित पद्मसिंहजी शर्मा एडीटर भारतोदय

अपने पत्र में लिखते हैं कि इसी पुस्तक में श्रीमद्भागवत देवी भागवत, पद्म, विष्णु, शिव, लिङ्ग, अग्नि, कूर्म, वाराह, भविष्य, ब्रह्म वैवर्त्त, वामनादि पुराणों से सभ्यता पूर्वक यह दर्शाया है कि अठारह पुराण महर्षि व्यास प्रणीत नहीं हैं इस पुस्तक में आर्य्य समाजिक दुनियां के ग्रन्थकारों में प्रसिद्ध मुं० चिम्मनलालजी वैश्य ने बड़े परिश्रम से काम लिया है खूब छानबीन के साथ पुराणों से प्रमाण इकट्ठे कर अपने मतकी पुष्टि की है लम्बी २ कथाओं का सार हिन्दी भाषा में लिखकर मूल प्रमाण यत्र तत्र उद्धृत किये हैं पुस्तक का क्रम और लिखने का ढंग अच्छा है पुस्तक पढ़ने में जी लगता है यह पुराणों के अनुयायी और विरोधी दोनोंके देखने योग्य और कामकी है

श्रीमान् पंडित बाबूरामजीशर्म्मा एडीटर सुधांशु

श्रीयुत मुं० चिम्मनलाल जी वैश्य एक पुराने आर्य्य भद्रपुरुष हैं आपने नारायणी शिक्षा आदि लाभकारी पुस्तकें लिखकर आर्य्य धर्म्म प्रचारार्थ बड़ी सहायता दी है और साहित्य पर बड़ा उपकार किया है। हाल में ही आपने **पुराण तत्व प्रकाश** नामक एक नूतन पुस्तक तय्यार की है हमने इस के दो भागोंको आदि से अन्त तक पढ़ा है इस लिये हम दावे के साथ कहसक्ते हैं कि यह अठारह पुराणों का तत्व प्रकाश करने में अनुपम और अद्भुत प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में प्रश्नोत्तर की रीति पर पुराणों का विषय बड़े विस्तार के साथ वर्णित है और

साथ ही साथ उसकी असारताका खण्डन भी बड़ी योग्यता के साथ लिखा है। हमारी सम्मति में इसकी एक २ प्रति प्रत्येक आर्य्य गृह में अवश्य पहुंचनी चाहिये।

श्री१०८श्रीस्वामी विशेश्वरानन्दजीका श्रीब्रह्मचारी नित्यानन्द सरस्वती जी महाराज

श्रीमान लाला चिम्मनलालजी प्रणीत पुराणतत्व प्रकाश नामक पुस्तक हमारे देखने में आया इस पुस्तक के नाम से ही इस का रहस्य विज्ञ पाठकों को ज्ञात हो सकता है आप की लेख शैली कैसी उत्तम होती है इस का परिज्ञान आप के बनाये गहस्थाश्रम आदि ग्रन्थों से ही पाठकों को हो चुका है। पुराणा की परताल की आवश्यकता थी उस शुभ कार्य का भी उक्त महोदय द्वारा प्रारम्भ हो गया है हम वाचक वृन्द से सानुनयसाग्रह निवेदन करते हैं कि इस पुराण तत्व को ग्रहण करके इस के तत्व से लाभ उठावें और ग्रन्थकर्ता महानुभाव क श्रम को सफल करें ताकि ग्रन्थकर्ता का उत्साह बढ़े और अन्य उत्तमोत्तम ग्रन्थ निर्माण द्वारा ग्रन्थकर्ता वाचक वृन्द की सेवा कर सके।

बाबू फूलचन्द साहब बेंकर नीमच छावनी

आपका पुराणतत्व नामक पुस्तक जैसा सुनते थे वैसा ही पाया इस बहु मल्य पुस्तक में आपने पुराणों के खण्डनीय विषयों का खण्डनही नहीं किया है किन्तु उनके वेद महिमादिक प्रकरण देकर पुस्तक को परमोपयोगी बना दिया है पुस्तक क्या है मानों १८ पुराणों के स्वरूप देखने को दर्पण है मूल्य भी १॥) रु० अधिक नहीं है मैं आपके

इस परोपकारक कार्य की प्रशंसा करता हुआ अनेकशः धन्यवाद देता हूं ॥

श्री स्वामी नित्यानन्दजी अनाथ भारत सेवक तथा स्वतन्त्र प्रचारक ।

मैंने आपके पुराण तत्व को सांगोपांग पढ़ा वास्तव में आपका पुरुषार्थ सराहनीय है और ग्रन्थ अपूर्व है ।

श्री. बाबू हजारीलालजी रईस तिलहर

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मावलम्बियों को देखने योग्य है जिसमें सभ्यता के साथ बहस की गई है मैंने ऐसी पुस्तक इस विषय में नहीं देखी इस की भाषा बड़ी सरल है और स्त्रियों के भी देखने योग्य है ।

श्रीदेवी सदांकुंवरजी धर्मपत्नी सरदारतारासिंह जी रईस रसूलपुर ।

मैंने पुराण तत्व के दोनों भागों को अच्छे प्रकार पढ़ा पुस्तक यथार्थ में उत्तम है मेरी बहुतही पसन्द आई इसके लिखने का ढंग बहुत ही अच्छा है ॥ इत्यादि ॥

सरस्वतीन्द्र जीवन

अर्थात

श्री १०८ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी का स्वच्छ हिन्दी भाषा में जीवन चरित्र

प्रिय पाठक गणों !

यों तो आपने स्वामी महाराज के हिन्दी भाषा में कई एक जीवन देखे और पढ़े होंगे परन्तु यह निराला जीवनहै

इसमें मैंने जो परिश्रम किया है वह आपको पढ़ने से विदित होगा प्रथम तो भाषा सरल प्रिय जिसको स्त्रियां और पुत्रियां भी अच्छे प्रकार समझ सकती हैं । यथार्थ में यह स्त्री पुरुष पुत्र पुत्रियों के देखने के योग्य है ।

महाशय गणों ! एक बार आप भी पढ़लीजिये फिर देखिये आपका चित्त कैसा प्रसन्न होता है आर इससे कैसी २ शिक्षाऐं मिलती हैं । मूल्य १≈) डाकव्यय ।) चार आना ॥

इस के विषय में—

श्रीमान् पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी

जुलाई १९०९ ई० की सरस्वती में फरमाते है कि—

" स्वामी दयानन्द सरस्वती के जितने जीवन चरित्र प्रकाशित होचुके हैं उनमें से श्रीयुत लेखरामजी का उर्दू में लिखा हुआ जीवनचरित्र सर्वश्रेष्ठ है । उसी के आधार पर यह सरस्वतीन्द्र जविन लिखा गया है । आपने लेखरामजी की पुस्तक से प्रायः सारी मुख्य २ घटनाओं की सामग्री उद्धृत करके इस पुस्तक की रचनाकी है इसके सिवा मास्टर आत्माराम और लाला राधाकृष्णजी के लेखों से भी आपने सहायता ली है । पुस्तक में स्वामीजी के साधारण चरित्र के अतिरिक्त उन के शास्त्रार्थ, उन के धर्मोपदेशक और उन के ग्रन्थ निर्माण आदि की भी बातें हैं पुस्तक बड़े २ कोई ४०० पृष्ठों में समाप्त हुई है । टायप अच्छा । काग़ज मोटा है । स्वामीजी पं० लेखरामजी और पं० गुरुदत्तजी विद्यार्थी के हाफटोन चित्र भी पुस्तक में हैं । इस पर भी इतनी बड़ी पुस्तक का मूल्य सिर्फ १≈) है । महात्मा जन चाहे जिस देश,

जाति, धर्म और सम्प्रदाय के हों उनका चरित्र पढ़ने से कुछ न कुछ लाभ अवश्य ही होता है। जो ऐसा समझते हैं उन्हें स्वामी जी का चरित्र भी पढ़ना और अपने संग्रह में रखना चाहिये।

श्रीमान् पं० विष्णुलालजी शर्मा मुन्सिफ बरेली

मैंने आपके छपाये सरस्वतीन्द्र जीवन को पढ़ा।

पं० लेखरामजी स्वर्गवासी के संग्रहीत चरित्रों को छोड़ शेष अब तक जितने छपे हैं उन से इस में अधिक हाल पाये वास्तव में आपने उर्दू के उन सारगर्भित लेखों की जिन के आनन्द से विना उर्दू जानने वाले वञ्चित रहते थे भाषा करके बड़ा उपकार किया है मैं समझता हूं कि आपने इस इतिहास के लिखने में श्री स्वामीजी के कार्य काल को यथा क्रम रखा है पुस्तक की छपाई अति सुन्दर है। और चित्र भी सर्वाङ्ग उत्तम हैं। मूल्य १॥) अधिक नहीं है मैं आपको इस कार्य पूर्ति का धन्यवाद देता हूं॥

श्रीमान् ठाकुर गिरवर सिंह साहिब पूर्वोक्त अवैतानिक उपदेशक श्रीमती आ०प्रा०सभा संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध।

मैंने मुं० चिम्मनलालजी वैश्य लिखित सरस्वतीन्द्र जीवन को देखा और ध्यान से पढ़ा और बहुधा स्थानोंपर धर्मेन्द्र जीवन से मिलान किया तो जान पड़ा कि इस में निम्न लिखित बातें अधिक हैं जो बड़ी उपयोगी और लाभदायक हैं।

(१) काशी शास्त्रार्थ पर कई एक समाचार पत्रों की सम्मातियां—
(२) कलकत्ता, हुगली, डुमरांव, सहारनपुर और शाहजहांपुर में योग्य पुरुषों के प्रश्नों के यथावत् उत्तर—

(३) उदयपुर में स्वामी दयानंदजी की दिनचर्य्या–
(४) महाराज उदयपुर को दिनचर्य्या का उपदेश–
(५) जैनियों के सुप्रसिद्ध पं० आत्मारामजी साधू सिद्धकरणजी के प्रश्नों का भले प्रकार समाधान–
(६) पादरी ग्रे साहिब अजमेर और बम्बई में एक पादरी साहिब से धर्म चर्चा मसौदा में बा० बिहारीलालजी ईसाई से प्रश्नोत्तर–
(७) आर्य्य संमार्ग संदर्शनी सभा का सविस्तार वर्णन और उसके प्रश्नों के उत्तर–
(८) मौलवी मुहम्मदअहसन साहिब जालन्धरी मौलवी मुहम्मद क़ासिम साहिब मौलवी मुहम्मद अब्दुलरहमान साहिब जज उदयपुर के शास्त्रार्थ–
(९) स्वामी जी की शिक्षा का क्या २ फल हुआ ।

इसकी भाषा सरल, प्रिय, चित्त को लुभानेवाली है जिस को स्त्रियां भी समझ सक्ती हैं कागज उत्तम स्याही और छापा श्रेष्ठ तिस पर भी मुन्शी जी ने सर्व साधारणके सुभीतेके लिये ४०० पृष्ठ होने पर भी मूल्य अत्यन्त स्वल्प १=) सजिल्द १॥) ही रक्खा है ।

श्रीमान् पण्डित **निरंजन देव शर्म्मा** उप० श्रीमती प्रति निधि सभा–मैंने इस जीवन को विचार पूर्वक पढ़ा बड़ा ही रोचक है इस पर भी भाषा सरल अनेकान विषय इस में ऐसे हैं जो अभी तक नागरी के जीवन चरित्रों में नहीं छपे कम पढ़े मनुष्य और स्त्रियां भी भले प्रकार समझ सक्ती हैं इसकी उत्तमता वास्तवमें पढ़ने से ही प्रतीत होगी सच तो यह है कि अनेक प्रकार से उत्तम और तीन मनोहर चित्रों सहित होनेपर भी इस पुस्तकका मूल्य १=) सजिल्द १॥) है अतः मैं आर्य्य पब्लिक तथा अन्यान्य श्रेष्ठ पुरुषों से सिफारिश करता हूं कि एक २ जिल्द मंगाकर आप

देख अपनी पुत्रियों, स्त्रियों, पुत्रों को अवश्य दिखलावें।

श्रीमान् पं० सदानन्दजी पेशकार तहसील किचहा जि० नैनीताल—मैं आपके सरस्वतीन्द्रजीवन को देख हार्दिक धन्य बाद देता हूं दरअसल यह पुस्तक अति सराहनीय है। तिस पर भी मूल्य बहुतही सस्ता है। इत्यादि—

भारत प्रसिद्ध

नारायणीशिक्षा (गृहस्थाश्रम) का अष्टम एडीशन

यह पुस्तक बड़े परिश्रम से वेद छः शास्त्र अठारह स्मृति और अठारह पुराणों के आतिरिक्त चरक, सुश्रुत आदि ग्रन्थों और बड़े बुद्धिमान स्पीकरों और मशहूर २ समाचार पत्रों के उत्तम २ आर्टीकलों से संग्रह कर, ६४० पृष्ठ पर रायल अठपेजी बम्बई अक्षरों में उत्तम कागज पर मुद्रित कराई है जिस में उत्तमता यह भी है कि प्रत्येक विषय का तर्क द्वारा सिद्ध कर दिया है सम्पूर्ण विषय ५०० के लगभग हैं अर्थात् गृहस्थ सम्बन्धी कोई विषय ऐसा नहीं जिस का आन्दोलन इस में न किया गया हो क्योंकि इसमें प्रथम आरोग्यता रहने के निमय २=गर्भाधान की रीति और उस के उपयोगी विषयों का वर्णन ३—ब्रह्मचर्य के यथावत् पालन के लाभ ४—विद्या और गुरु, पुरोहित, आचार्य के लक्षण की शिक्षा की आवश्यक्ता और प्राचीन समय की ५५ विद्वान् धर्मात्मा शूरवीर स्त्रियों के जीवन चरित्र ५—विवाह कब और किस प्रकार होना चाहिये ६—धन की महिमा ७—दान महात्म ८—पति पत्नीधर्म ९—वेद, नीति की शिक्षायें १०—स्त्री धर्म की महिमा, पति बृताओं की कथा ११—गृह कार्यों का वर्णन अर्थात् रसोई, पकवान, मुरब्बे, आचार, गुलकन्दादि के बनाने की रीतें १२—वैद्यक विद्या के लाभ कारी विषय १३—सीना पिरोना १४—पति धर्म १५—धन प्राप्त की रीतें १६—संस्कारों के लाभ १७—आ-

बागबन १८–धर्म मार्ग १९--नित्य कर्म २०–पुराण महात्म २१–त्योहार २२–ज्योतिष २३--मन्त्र यन्त्र २४–रसायन २५--ब्रत २६--तपस्या २७–तीर्थ २८–योग २९–मोक्ष आदि विषय लिखे गए हैं जिन का इस स्थान पर यथावत वर्णन करना अत्यन्त कठिन है, दांतों का मंजन आंखोंका अंजन मस्तक, धातु, बुद्धि के बलिष्ट करने स्त्रियों के रोग निवाणार्थ सुहाग सोंठ और स्त्री रोग, लवण भास्कर लोलम्ब राज चूर्ण, बवासीर खूनी और बादी आदि के उपयोगी नुसखे कौड़ियों में हाथ आयेंगे बालकों के सम्पूर्ण रोगोंकी चिकित्सा मोती, कस्तूरी की पहिचान, जानवरों के बिष उतारने का उपाय, कपड़े रंगने की रीतें, प्राणायाम का ढंग जिसकी प्राचीन ऋषियों ने बहुत कुछ प्रशंसा की है आपके भेटहै यह उत्तम अनुपम पुस्तक आप और आपकी सन्तानों को शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति के ढंग बतलानें में एक बुद्धिमान डूैबर है। जो आप को इच्छानुसार आनन्द और मंगल देता हुआ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा अमूल्य पदार्थों को देने के लिये उत्तम है तिसपर भी देश की कुदशा को देख प्रत्येक गृहस्थ के हाथ में पहुंचने के लिये इसका मूल्य वही १।) रक्खा है। मित्रों इतना सस्ता और ऐसी अच्छी यही पुस्तक है जिसकी प्रशंसा में हमारेपास हजारों सार्टीफिकट आचुके हैं सच मानिये कि आपभी देख कर प्रसन्न होंगे। आपके लिये कुछ सार्टीफिकट लिखता हूं

श्री मान् पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी

(सरस्वती भाग १० सं० ७)

पृष्ठ संख्या ६१२। सांचा बड़ा। कागज अच्छा। छपाई बंबई के टायपकी। मूल्य सिर्फ १।) रुपया। इस इतनी सस्ती परन्तु उपयोगी पुस्तक का दूसरा नाम गृहस्थाश्रम शिक्षा है। पुस्तक कोई ३० भागों में विभक्त है गृहस्थाश्रम से सम्बन्ध

रखनेवाली । शिशुपालन, शरीर रक्षा, ब्रह्मचर्य, विवाह, पति, पत्नी धर्म, नित्य कर्म आदि कितनी ही बातों का इसमें वर्णन और विचार है । श्रुति, स्मृति, उपनिषद, पुराण, आदि से जगह जगह पर विषयोंपयोगी प्रमाण उद्धृत किये गये हैं । पुस्तक में सैकड़ों बातें ऐसी हैं जिन का जानना गृहस्थ के लिये बहुत जरूरी है । इस पुस्तक को लोगों ने इतना पसन्द किया है कि—आज तक इस के ६ संस्करन हो चुके हैं ।

श्रीमान् पं० विष्णुलालजी साहब एम. ए. सबजज

MY DEAR MUNSHI CHIMMAN LALL JI,

The Narayani Siksha is a Library in itself, being a work of Cyclopedia information No subject theoretical or practical, which is useful to a house holder has been left untouched. The style is simple, yet impressive. I am not aware of a better book for females in Hindi, and am of opinion that no Hindu family should be without a copy of your book.

श्रीमान बाबू रामनारायण साहब तिवारी ।

Dear Sir

I have read the Narayani Siksha of or Grihasta Ashram compiled by you, I do not know of any other book in Hindi which gives in such a short compass every thing that a Grihasta or a house holder,should knew-Besides, I find your book a valuable additeruinn to the literature for Hindu women. It is a pleasuro to see thet the book is so cheap a lesson that other authors on popular subjects might welll earn from you I think a book on vedic principles should beas cheap as possible and no ene will I am sure grumple to spend one rupee and four annas more forten and usetul marters contained in your book.

श्रीमान् ब्रह्मचारी स्वामी नित्यानन्द सरस्वती

मैंने आपकी बनाई हुई पुस्तकों को अच्छे प्रकारसे देखा

यह सब किताबें पबलिक को शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति करनेवाली हैं विशेष खुशी यह है कि प्रत्येक विषय के साबित करने के लिये वेद, स्मृति, पुराण, इत्यादि के प्रमाण अच्छे प्रकार से दिये हैं जिसके कारण इन पुस्तकों के पढ़नेवाले पूर्ण लाभ उठाते हैं दौरे में मुझसे आपकी पुस्तकों की अनेकान पुरुषोंने प्रशंसा की वास्तव में यह प्रशंसा ठीक है क्योंकि आपने इनके लिखने में बड़ा परिश्रम किया है इस लिये मेरा चित्त आपसे बहुत प्रसन्न है । मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि आप अपने जीवनभर इस उपयोगी कार्य्य को सदा करते रहें जिस से देश में वैदिक ख्यालात की उन्नति होकर सब प्रकार आनन्द हो ।

सम्पादक महोदय

श्री० महात्मा मुन्शीरामजी सं० सद्धर्मप्रचारक, श्री० पं० तुलसीरामजी वेदप्रकाश मेरठ, सम्पादक सरस्वती ।

श्रीमान् मुन्शी बख्तावरसिंह साहिब एडीटर आर्यदर्पण शाहजहांपुर श्रीमान् एडीटर आर्यावर्त्त दानापुर सरस्वतीविलास नरसिंहपुर श्रीयुत् एडीटर आर्यसमाचार मेरठ । श्रीयुत एडीटर गोधर्मप्रकाश । श्रीयुत एडीटर भारतसुदशा प्रवर्त्तक फर्रुखाबाद । इत्यादि ।

अन्य देखने योग्य पुस्तकें

गर्भाधान विधि—यह सातवींबार छपाई है इस में धातु और उसके गुण, स्त्रीप्रसंग, गर्भविधान, उत्तम संतान की विधि, गर्भ परीक्षा, उसकी रक्षा, गर्भ में पुत्र या पुत्री की पहिचान, गर्भवती का कर्तव्य, गर्भपात के लक्षण और उसकी चिकित्सा, प्रसवकाल प्रसूत की रक्षा, स्त्री पुरुषों में संतान होने के कारण के अतिरिक्त शिशुपालन और अनेक कठिन रोगों की चिकित्सा का वर्णन है । मूल्य ≈)॥

वीर्य्यरक्षा—यह पुस्तक सुख की खान है अवश्य आप देख कर संतानों को दिखाइये और उन को भयानक रोगों से बचा इये क्योंकि वीर्य्यरक्षा करना ही सुखों का मूल है शोक कि सन्ताने इस के लाभों को न जानकर कुमार्गियोंके संग पड़कर कुलमय कुरीतों से वीर्य्य का सत्यानाश कर भारत का भारत करते चले जाते हैं। मूल्य ≠)

नीति शिरोमणि—यह नीति सबनीतों की शिरोमणि है।−]

आयुर्विचार—यह पुस्तक वेदादि सत ग्रन्थों से लिखी गई है देखिये इस पर चलिये अल्पायु के दुःखों को त्याग ४०० सौ वर्ष की आयु के सुखों को भोगिये आप तो आयु के लिये ज्योतिषियों को माला माल कर देते हैं फिर क्या वेदोक्त सुखों के लिये ≶) व्यय करने में कुछ देर है

सत्यनारायण की प्राचीन कथा—मित्रों सहित सुनिये, देखिये कैसी अच्छी और उपयोगी कथा है। मूल्य −]॥

पत्रप्रकाश—यह सातवीं बार छपी है इस में पुत्र और पुत्रियों के लिये गद्य और पद्य में शिक्षा युक्त चिट्ठी पत्री लिखने की रीति है मूल्य ≶) यथार्थ शान्ति निरूपण—यह पुस्तक स्त्री पुरुषों पुत्र पुत्रियों और प्रत्येक मतमतान्तर के लोगों को शांति देनेवाली है इस के पाठ और विचार से आत्मा में एक प्रकार की शान्ति आती है जो सब सुखों की दाता है यथार्थ में इस के आशय बड़े गंभीर हैं।] शान्ति शतक—यह प्राचीन कवि शालहण मिश्र कृत श्लोक हैं जो भाषा सहित इस पुस्तक में छपे हैं इस के श्लोक सभा और विद्वानों में बोलने योग्य और मूर्खों के समझाने के लिये हैं इस का आशय प्रत्येक मनुष्य को धार्मिक बनाने के लिये उत्तेजित करता है ≠]

मित्रानन्द—मित्रता करने से प्रथम इस को देख लीजिये फिर कभी मित्रता न टूटेगी न क्लेश सहन करने पड़ेंगे मू० −]॥

धर्म बलिदान—जिस में उन धर्मात्मा पुरुषों के जीवन चरित्र हैं जिन्होंने धर्मार्थ अपने तन मन धन, को अर्पण कर दिया

जिस समय आप छोटे २ पुत्रों की धर्म वीरता का वृतान्त पढ़ेंगे आप का हृदय कांपने लगेगा नेत्रों से आंसुओं की धारा बह चलेगी मू० ≈) भारतोपदेश–इस में श्री रामचन्द्र जी का वह उपदेश है जो उन्होंने चित्रकूट पर भाई भरत को किया था मूल्य)॥ ऋषी प्रसाद–इस में महात्मा शौनकका उपदेश है मूल्य)॥ रत्नजोड़ी–इस में लुकमान हकीम की शिक्षा है मू०)॥ रत्नप्रकाश–महर्षियोंकी शिक्षायें हैं मू०)॥ द्वैतप्रकाश ~) राधास्वामी मत परीक्षा ~)सत्य विवेक)॥ संध्यादर्पण~)॥ नित्य संध्या विधिः)। नित्य हवन विधिः)। अनमोलरत्न)॥ शिष्टाचार)॥ संसारफल)॥ ईश्वर सिद्धि)। मूर्तिपूजा विचार पैसे की २ ॥

स्त्रियों के लिये उपयोगी ग्रन्थ

नीतियुक्त स्त्री धर्म ≈) स्मृत्युक्त स्त्री धर्म~)॥ स्त्री मिलाप)॥ चित्रशाला)॥

भजनो का नया सिलसिला

जिस में सभ्यतायुक्त प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक समय पर गाने योग्य भजन लिखे गये हैं जो स्त्री, पुरुष, बाल. वृद्ध सब ही के गाने योग्य हैं।

स्त्री ज्ञानमंजरी–१ भाग)॥ तथा २ भाग ≈) अनाथ पुकार)॥ भजन पचासा ~) भजनसार संग्रह ~]॥

चित्र ! चित्र !! चित्र !!!

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती-पण्डित लेखराम महात्मा मुंशीराम, पण्डित गुरुदत्त, लाला हंसराज, एक में सात चित्र, मूल्य प्रत्येक का एक२ आना ॥

॥ पुस्तक लेते समय हमारी मुहर जरूर देखलीजिये

मिलने का पता–चिम्मनलाल भद्रगुप्त वैश्य

तिलहर जिला शाहजहांपुर